मुहब्बत एक इबादत

(मुहब्बत में बेख़ुदी के तसव्वुर)

'साथी' जहानवी
(अजय कुमार शर्मा)

बोधि
साहित्य जन-जन के लिए

बोधि प्रकाशन
सी-46, सुदर्शनपुरा इंडस्ट्रियल एरिया एक्सटेंशन
नाला रोड, 22 गोदाम, जयपुर-302006
दूरभाष : 0141-2213700, +91-9829018087
ई-मेल : bodhiprakashan@gmail.com

कॉपीराइट © अजय कुमार शर्मा

प्रथम संस्करण : दिसम्बर, 2018
ISBN : 978-93-88167-97-0
कम्प्यूटर ग्राफिक्स : बनवारी कुमावत 'राज'
आवरण संयोजन : बोधि टीम

मुद्रक
तरु ऑफसेट, जयपुर # 09829018087

मूल्य : ₹ 120/-

MUHABBAT EK EBADAT (POETRY) by 'Sathi' Jahanavee (Ajay Kumar Sharma)

समर्पित

समर्पित है उस निर्मल और पवित्र प्यार को
जो हर-पल रोम-रोम में हमेशा विद्यमान है
जो प्रतीक है मीरा, राधा-कृष्ण के रिश्तों का
जो मिसाल है हीर औ रांझा के सम्बन्धों का
जिसमें घर और परिवार होने का अहसास है
जिसमें बेशुमार प्यार की चाहत व क़शिश है
जिसमें एक दूसरे की ज़रूरतों के जज़्बात हैं
जिसमें तन-मन के संसार होने का विश्वास है
जिसमें विचारों का इज़हार, इक़रार व क़रार है
जिसमें दिल से बेहिसाब बेख़ुदी का आलम है
जिसमें सतरंगी सावन व बसंत का मधुमास है
जिसमें शमा व परवाने की क़ुदरती कायनात है
जिसमें दिल की पुकार में सगुन की शहनाई हैं
जिसमें रस्मों औ रिवाज़ों के तीज व त्यौहार हैं
जिसमें विरह की वेदना मे मिलन की मुरादें हैं
जिसमें प्यार के अजर-अमर होने की कामना है
जिसमें सदियों तक साथ रहने की ख़्वाहिशें हैं
जिसमें प्यार एक साधना, उपासना, आराधना है
जिसमें मन की वीणा के मधुर गीत-संगीत है
जिसमें मुश्क़िल वक़्त में सहयोग की भावना है
जिसमें करवा चौथ के व्रत, सावन के सोमवार हैं
जिसमें एक दूसरे की भावनाओं का सम्मान है
जिसमें प्रेम की हिफ़ाज़त में दिल से दुआयें हैं
जिसमें हर हालात में एक-दूसरे पर ऐतबार है
जिसमें सुहाग के सिंदूर, सात वचन के बंधन है
जिसमें मिलन की तमन्ना ख़ुदा की इबादत है
जिसमें चराग़ों की रोशनी बनने की भावना है
जिसमें प्यार की ख़ुशी में शजर का चिन्तन है
जिसमें प्यार इन्सान के लिए हवा औ पानी है
जिसमें तन व मन के भाव का ईश्वरीय बोध है।

अनुक्रम

वजूद के लिये	21
चाहत और क़शिश	23
चाहत के सुबूत	25
ऐसा है मेरा प्यार	27
हसीन और ख़ूबसूरत लम्हें	38
मुहब्बत की ख़्वाहिशें	42
ईश्वर का अहसान	45
अर्थहीन नहीं है प्यार	52
क्या यह मुमक़िन होगा	56
मधुर मिलन का अहसास	69
महबूब का अहसान	73
मुहब्बत के सुबूत	80
मन की मुरादें	82
मुहब्बत की दास्तान	85
मुहब्बत का ऐतबार	89
मुहब्बत के इत्मीनान	91

प्यार का सागर है ओह! मेरे मधुर प्यार

'मुहब्बत एक इबादत' में ओह! मेरे मधुर प्यार की भाव भूमि का फ़लक़ इतनी व्यापकता लिये हुए है कि जल, पृथ्वी, अग्नि, हवा और आकाश पाँच तत्वों को स्पर्श करती हुई रचनाएँ प्रकृति के साथ अठखेलियाँ करती नज़र आती हैं। व्यक्ति, समाज, रीति-रिवाज़, उत्सव-पर्व, त्यौहार, परम्परा, सभ्यता और संस्कृति के उन सब सकारात्मक पक्षों को स्वीकार करती हुई चल चित्र की तरह रचनाओं का प्रवाह अनवरत चलता ही रहता है। कहीं सपाट मैदान, रेतीले टीले, विशाल पर्वत, सागर उनकी रचनाओं के प्रतीक बन कर अपने प्रेम का प्रकटीकरण करते नज़र आते हैं। तो कहीं उलाहना और उपालम्भ के रूप में खड़े-खड़े प्रश्न चिह्न लगाते अपनी उपस्थिति को दर्ज कराते हैं। मिलन चाहे प्रकृति के किसी भी स्वरूप का हो, जब होता है तो सब तरफ स्फूरण, प्रसन्नता, फूलों की ख़ुश्बू, पक्षियों का चहकना, पशुओं का चिंघाड़ना, वन-उपवन का खिलना, सरिता का कल-कल निनाद (झरने का स्वर) सबके सब ऐसे लगते हैं मानो अभिसारित उन्माद के अंकुश में बंधित दो प्राणियों का अनुपम मिलन सृष्टि के सभी उपागमों में केवल और केवल रवानी भर रहा हो। यही सब 'साथी' जहानवी की रचनाओं की रूमानियत है, यही उनकी इन कविताओं की तासीर है जिसे कोई कुछ भी नाम दे दे पर वो सच में तो दो दिलों की कहानी है जो सिर्फ़ और सिर्फ़ मिलकर एक होना चाहते हैं।

प्यार में उम्मीदें हैं, ज़फ़ा-वफ़ा हैं, वादे और इक़रार है, एक-दूजे में खो जाना है, पा लेने की उत्कट अभिलाषा है जो बेबाक होकर इस पंक्ति को कहती नज़र आती है कि सबसे मधुर है प्रीत की सगाई, मेरे महबूब बधाई हो बधाई।

ऐसा नहीं है कि प्यार में सब कुछ मन के अनुकूल ही होता हो, जब दो दिल मिलते हैं तो एक हो जाते हैं, खो जाते हैं, अपनी ही दीन दुनिया में तो ऐसा नहीं है कि उन्हें अनुकूलता ही मिलती हो, मिलन, विरह और बिछोह भी लेकर आता है फिर

ताने-अपेक्षाएँ, लुका-छिपी, तक़रार, खीझ, तड़प, गुस्सा, राग-ईर्ष्या, काम की अतृप्त भावना क्रोध के रूप में प्रकट हो ही जाती है। हम विभिन्न स्थलों पर ओह! मेरे मधुर प्यार के रचना कर्म को इस प्रकार अनुभव करते हुये ख़ुद को प्रवृत पाते हैं कुछ उदाहरण देखिएगा:-

रोशनी से जग-मग दीपावली का पावन त्यौहार हो
करवा चौथ के व्रत में सुहागन के मन में ऐतबार हो

और जब बसन्त आता है तो अपने महबूब की याद में रचनाकार की रचना स्मृतियों का एक ऐसा चित्र उकेरती है कि रचना स्वंय बोलने लगती है जैसे कि:-

बसन्त की ख़ुश्बुओं का सतरंगी मधुमास हो
रिमझिम सावन में हरियाली का अहसास हो
शरद-ऋतु में सूरज की तपन की आस हो
सहरा में प्यासे के लिये पानी की प्यास हो

जब मुहब्बत का रंग चढ़कर बोलने लगता है तो 'साथी' जहानवी की कलम लिखती है 'यक़ीनन ऐसे हसीन मंज़र को ही तो मुहब्बत का सुन्दर संसार कहते हैं साथी'। दीदारेयार के लिये मुहब्बत कभी संगीत का सहारा लेती है तो कभी महबूब को जीवन का भाग्य विधाता, हसीन संसार, घर-परिवार सब कुछ मान कर अपने प्यार का इज़हार करते-करते कह उठता है गुलाब के फूल जैसा है मेरा प्यार। विदेशी हनीमून के ज़माने में खेत और खलिहान है मेरा प्यार, गाँव के हाट बाज़ार जैसा है मेरा प्यार, रसोईघर का भोजन है मेरा प्यार। स्वयं का इस प्रकार प्रकटीकरण अद्‌भुत बन पड़ा है:-

महंगी कार की सवारी के ज़माने में
साधारण साईकिल जैसा मेरा प्यार
जिसमें मेरी वफ़ा और ईमानदारी है
रुसवाईयों से डरने के ख़यालात हैं

समाजवाद जैसे शब्दों को कवि प्रतीक के रूप में काम में लेता है। ऐसे अनेक शब्द जैसे सहकारिता, वेलेनटाइन डे, एल.ई.डी.लाईट, चिमनी, लालटेन, वाट्‌सअप,

फेसबुक, बुफे डिनर, पंगत और लंगर, कुन्दन जैसे अनेक शब्दों को प्रतीकों के रूप में इस संग्रह में लिया गया है।

अपने प्यार के लिये सब कुछ सहन करने की एवं परिस्थितियों से मुक़ाबला करने के लिये स्वयं सिद्ध अवस्था में रचना मुखर हो कर कहती है 'हे! ईश्वर मुझे आपसे कोई भी गिला और शिक़वा नहीं है, मुझे किसी भी तरह की बेहाली का, भूख प्यास का, मान-सम्मान का, बदनामी का, हर पल भोगने को तैयार हूँ क्योंकि मेरे महबूब ने मुझे अजर-अमर बेमिसाल प्यार दिया है।' रचनाकार बार-बार ईश्वर को धन्यवाद देता है और कहता है मेरा प्यार अर्थहीन नहीं है। वह हरियाला सोमवार हो जाता है, दीपावली की जगमग रोशनी है, करवा चौथ का पावन त्यौहार है और होली के रंगों की बहार उसमें समाई है।

महबूब की याद में वह स्वयं को कभी दीन और ईमान होना कहता है तो कभी अतिरेक में भगवान, मकान, अजान हो जाने की बात करता है। दूसरे ही क्षण वह पूरा ऐतबार दोनों को एक दूसरे पर हो जाने का प्रमाण देता है। विश्वास की पुष्टि वह यों करता है 'हम दोनों इस जन्म में तो न सही अगले जन्म में ज़रूर-ज़रूर मिलेंगे' यहाँ उनकी व्यक्तिगत परेशानी, घर-परिवार, जाति समाज, सामाजिक ताना-बाना कहीं न कहीं उसे प्रतिबन्धित करते हैं इस लिये तो वह अपनी उम्मीदों को विस्तार देते हैं और अपनी चाहत को चिरस्थाई कर देना चाहते हैं। पुनर्जन्म की बात कहते हुये अपने गुज़रे हुये अतीत की कुछ दैहिक क्रियाओं का स्मरण करते हुये कलम बहुत ही जज़्बाती हो जाती है और लिख देती है कि मेरा तुम्हारा मिलन कोई सामान्य मिलन नहीं था बल्कि वह 'तन और मन में मधुर मिलन का जोश था, सारा संसार भूलकर एक-दूजे का होश था।' काल्पनिक दृढ़ता ही सही पर उसे वह बाँधता है सुहाग के सिन्दूर में, फूलों से सजी सेज में तथा सुहाग रात के दैहिक मिलन के सहवास को हसीन जन्नत का नाम देता है।

यहाँ यह बात भी उल्लेखित करना आवश्यक हो जाता है कि ओह! मेरे मधुर प्यार का नायक और नायिका सचमुच एक दूसरे को बेहद प्यार करते हैं। ऐसा नहीं है कि समर्पण का आधिक्य स्त्री की कोमलता में ही बसता है। पुरुष तत्व भी जब बहुत स्नेहिल होता है तो उसकी वाणी इतनी कोमल हो जाती है कि उसके सामने कोमलता

भी कोमल दिखाई देती है और वह गा उठता है 'रस्मों और रिवाज़ों का बन्धन बनकर, परिवार की ज़रूरतें हो जाओ, अंग-अंग और रोम-रोम को प्यार में बसाकर, जीवन साथी का अहसास हो जाओ।'

मैं यह कह देना चाहता हूँ कि ओह! मेरे मधुर प्यार का सम्पूर्ण रचना कर्म अगर किसी एक बिन्दु पर विस्तारित हुआ है तो वह है सिर्फ़ और सिर्फ़ प्यार, प्रेम, प्रीत के सम्पूर्ण तराने, मिलन, बिछोह, कसक, राग, आसक्ति व छटपटाहट से गुज़रते हुये जिस यात्रा को पूरी करते हैं उस यात्रा का नाम है प्रेम यात्रा। प्रेम के कवि श्री 'साथी' जहानवी को इस रूमानियत संग्रह के प्रकाशन पर हार्दिक बधाई देते हुये कहना चाहूँगा तुम्हारा यह मधुर प्यार व्यक्ति से समष्टि तथा समष्टि से सृष्टि का प्यार बनकर केवल और केवल दैहिक नहीं रहेगा वरन यह पारलौकिकता को पाकर बहुत व्यापक फ़लक़ प्राप्त कर अजर-अमरता प्राप्त करेगा यही इस संग्रह की फलश्रुती है। कोटिश: कोटिश: बधाई!

-विष्णु प्रसाद शर्मा 'विष्णु'
145-बी, विनोबा भावे नगर, कोटा
मो. : 9782759822

अभिमत

अत्यन्त अल्पकाल में ढेड़ दर्जन पुस्तकों का साहित्यिक क्षेत्र में अपना स्थान बनाना रचनाकार 'साथी' जहानवी की अनवरत साधना, तपस्या और साहित्य समर्पण को स्वत: दर्शाता है। कवि अपने स्वतन्त्र तन-मन से अपने चारों और जो भी देखता है उसे पूरी ईमानदारी से शब्दों का रूप देकर सबका ध्यान आकर्षित करता है। 'साथी' की रचनाएँ नवोदित साहित्य की श्रेणी में सुधी साहित्यकार ले सकते हैं। जैसा कि स्वयं 'साथी' ने भी कहा है कि साहित्यिक दृष्टि से ग़लतियाँ होना मेरे लिये स्वाभाविक है, विनम्र भाव से प्रस्तुत यह सब सामान्य जन के लिये है।

'साथी' ने एक ही शब्द मुहब्बत को कई रूपों में प्रस्तुत किया है। साथ ही मुहब्बत ही संसार के विभिन्न प्रकृति जन्य गुण-दोषों का मूल है। मुहब्बत को बहुआयामी रूप देने एवं उससे होने वाले प्रभाव का अक्षरश: वर्णन 'साथी' ने पूरी तन्मयता, सच्चाई और ईमानदारी के साथ किया है जो अति सराहनीय है।

मुहब्बत ही विज्ञान है, मुहब्बत ही जहान है, संसार ही मुहब्बत की देन है, मुहब्बत बिना व्यक्ति ज़िन्दा नहीं रह सकता। यदि यह सब हमको समझना है तो 'साथी' जहानवी की पुस्तकों को पढ़ना पड़ेगा। 'साथी' ने मुहब्बत को यथार्थ से उठाकर दार्शनिकता, आध्यात्मिकता, कर्मशीलता आदि से जोड़ते हुये उसे अजर-अमर बताने का भरपूर प्रयास किया है और उसमें सफल भी कहा जा सकता है। 'साथी' की समस्त रचनायें स्वान्त: सुखाय होते हुये भी परिजन हिताय है। उनकी रचना एक आदमी की रचना है, उनकी सोच है तथा उनके प्रति किया जाने वाला प्रयास है। मुहब्बत में सामाजिक बन्धन भी कम बाधा एवं रुकावट नहीं बनते हैं किन्तु 'साथी' उनकी परवाह नहीं करते हुये एक ही नहीं अनेकों जन्मों तक उसे ज़िन्दा रखना चाहते हैं। भाषा शैली आम आदमी की है ताकि समझने में विशेष कठिनाई नहीं हो।

फिर भी कवि 'साथी' द्वारा पूर्व में इसके लिये अन्यथा न लेने का निवेदन भी किया जा चुका है।

अल्प काल में इतना सारा साहित्यिक अभ्यास एवं उसमें निरन्तर सुधारात्मक दृष्टिकोण विशेष मार्ग दर्शन एवं गुरु के बिना नितान्त असम्भव है। अत: 'साथी' की सभी उपलब्धियों के पीछे 'साथी' के महान् गुरु बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्रीमान् भगवत सिंह जी जादौन 'मयंक' साहब का प्रत्यक्ष एवं परोक्ष योगदान रहा है इसे विस्मृत नहीं किया जा सकता है। अत: मैं, मेरा परिवार एवं समस्त ब्राह्मण समाज आपका आजन्म आभारी रहेगा। हाड़ौती ही नहीं अपितु समस्त भारत वर्ष में हरियाणा गौड़ ब्राह्मण समाज का युवा या कोई साथी अभी तक नहीं हुआ जिसने साहित्य के क्षेत्र में इस प्रकार का परचम लहराया हो। यह हम सभी समाज बन्धुओं के लिये बहुत गौरव की बात है।

अच्छा हो हमारे सभी साथी जन अपना अमूल्य समय जो वे टी.वी. और इन्टरनेट को देते हैं उसमें से थोड़ा वक़्त निकालकर अपने भाई अजय की पुस्तकों को पढ़ने का श्रम करें। कहीं कोई बात हमारे आपके मानस को छू जाये एवं कोई सामाजिक एवं राष्ट्रीय भाव हमें भी जाग्रत हो जाये तो कवि अपना कृत्य सफल मानेगा।

अन्त में हरियाणा गौड़ ब्राह्मण समाज कोटा के वर्तमान अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार जी शर्मा एवं समस्त कार्यकारणी के सदस्यों की ओर से अपने भाई अजय शर्मा 'साथी' जहानवी को हार्दिक शुभकामनाएँ एवं उज्ज्वल भविष्य के लिये परम पिता परमेश्वर से हृदयगत भाव से प्रार्थना।

आपका अपना

-भगवती प्रसाद पंचौली
उपाध्यक्ष ह.गौ.ब्रा.समाज कोटा
3-सी 35, तलवन्डी कोटा-5
मो. : 9460567194

अभिमत

झील जैसे नीले नयनों में नज़ारा निराला है
गुलाबी गालों पर रसीले होठों का प्याला है
अंग-अंग और रोम-रोम प्यार में नशीला है
प्रेम के अहसास से जीवन एक मधुशाला है

कुछ इसी तरह के जज़्बात अजय शर्मा 'साथी' जहानवी के काव्य संकलनों में हैं। इनकी काव्य यात्रा का कल्पना लोक असामान्य है। वे मुहब्बत में गहरे पैठ कर लिखते हैं। मुख्य रूप से उनके कलाम में शहरी मध्यमवर्गीय जवान मुहोब्बतियों की आप बीती प्रेमालापी मालिकायें हैं। उनकी पोथियों में सबका केन्द्रीय विषय मुहब्बत या प्यार ही है। वे केवल प्रेम से अपनी रचनाओं की शुरूआत करते हैं और प्रेम पर विराम देते हैं, वो प्रेमी जो प्यार में ज़िन्दगी बिता देने को ही प्रतिबद्ध है फिर भी प्राथमिकतायें बदलते हैं, प्रेम को बीत जाने देते हैं। उनकी निग़ाह में इश्क़ एक नकचढ़े तिफ़्ल (बच्चा) की मानिन्द है, जब तक गोद में उठाये हुये दुलराते, हिलराते रहो तब तक ख़ुशियों के असबाब से मालामाल कर देगा लेकिन जैसे ही गोद से उतारो चिचियाने लगेगा, मिमियाने लगेगा और शर्मसार कर देगा आपको। 'साथी' अपने सहयात्री के बारे में कुछ ऐसा ही अपनी पुस्तकों में यहाँ-वहाँ बयाँ कर देते हैं।

जैसे मैंने अपने कथन में पूर्व में उनके कलाम का नमूना पेश किया है उसे पढ़ कर आपको लगा होगा कि वह अनेक बार दर्शन में खो जाते हैं, अनेक उपमान और उपमाओं का इस्तेमाल करते हैं, पूरी तरह डूब जाते हैं, खो जाते हैं, सराबोर हो जाते हैं, शब्द चमत्कार के फेर में उलझ जाते हैं लेकिन भटकते नहीं, बस यही उनकी लेखनी की विशेषता है। यहाँ मुहोब्बत के मैदान में उनकी प्रवृति पलायनवादी नहीं है। लौटकर आना ही प्रकृति का धर्म है। उनकी रचना धर्मिता में आपको कुछ नया नहीं लगेगा। कुछ अजूबा नहीं लगेगा वही जो कुछ समाज में गुज़रता आया है गुज़र रहा है और भविष्य में भी गुज़रता रहेगा। अगर मैं सच कहूँ तो बात दरअसल ये है कि आप

नया चाहते ही कब हैं। आपने तो उसे ही मक़बूल (लोकप्रिय) किया है जो आपकी अपनी बीती कह सके। इस बात को देखते हुये 'साथी' जहानवी अपनी बात कहने में सफल रहे हैं। वे प्यार की लजीज़ी और उसकी शुष्कता के पैमाने को समान रखते हुये अपनी कविताओं को अन्ज़ाम तक पहुँचाने में सफल रहे हैं। कविताओं का प्रवाह लहलहाते चमन में खिले फूलों की ख़ुश्बू में लिपटा हुआ एक मंज़र सा लगता है जिसमें ख़रामा-ख़रामा (धीरे-धीरे) गुज़रने को दिल करता है। कहीं किसी प्रकार की जल्दी, ऊब कर निकलने को जी नहीं करता। कविताओं में प्रेम के अलावा भी समाज है, रिश्ते हैं, प्रकृति है,पूरी कायनात है, मिलन और बिछोह है, तिरस्कार है, तक़रार है, समर्पण है, शीत ऋतु की ताज़गी है, ग्रीष्म की चिलचिलाहट ये सभी घटक मिलकर पुस्तक के कलेवर को पठनीय बनाने में सहायक सिद्ध हुये हैं।

यह बहुत बड़ी बात है कि आज के इस दौर में प्यार पच ही कहाँ पाया है। उस पर विकराल काल की गहरी छाया है कि 'साथी' जहानवी ने इस तिजारती(पूँजीवादी) युग में भी उसे सहेज कर रखा है। ये श्लाघनीय(प्रसंशनीय) है। आस-पास की दुनिया से उठाये हुये इनके बिम्ब। लगता है जैसे सब सुने हैं, देखे हैं, अनुभव किये हैं। वही प्रेम की चालबाज़ियाँ, बेवफ़ाई, इज़हारे मुहब्बत, ख़ुद को कोसना, ख़त, आँसू, सब-कुछ वैसा का वैसा जो आप महसूस करते हैं, आपसे अलग नहीं। दिल को रूमानियत की ख़ुराक देनी है तो पढ़िये 'साथी' के कलाम।

अन्त में आप पायेंगे कि वे इस इश्क़ के दरिया में, उसकी अतुल गहराई में डूब कर जाना चाहते हैं जहाँ दरिया की लहरों के बाद एक सख़्त ज़मीन भी है जहाँ वे अपने को स्थाई रूप से अडिग हो कर खड़ा होना चाहते हैं। बक़ौल ग़ालिब:-

ये इश्क़ नहीं आसाँ, इतना तो समझ लीजे
इक आग का दरिया है, और डूब के जाना है।

आपका अपना

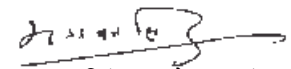

-भगवत सिंह जादौन 'मयंक'
(सेवानिवृत व्याख्याता एवं वरिष्ठ साहित्यकार)
346, लक्ष्मण मार्ग, सरस्वती कॉलोनी, खेडली फाटक, कोटा-324001
मो. : 9414390988, 9057579203

दिली गुफ़्तगू

(जज़्बात-ए-साथी)

11 जनवरी 2015 को एक साथ पाँच काव्य संग्रहों बेगुनाही के सुबूत, सहरा में शजर, समन्दर में बारिश, सावन में पतझड़, कैंसर के पाँचवें हालात और website www.xyzsathi.com और दिनांक 16 अप्रैल 2017 को एक साथ छह रूमानियत काव्य संग्रह ओह! मेरे मधुर प्यार, विरह की वेदना, दिल की पुकार, मुहब्बत एक शजर का फलसफ़ा, मन का संसार और बेज़ुबान तसव्वुर के मंजरे-आम (विमोचन) के बाद सात काव्य संग्रह जिसमें से पाँच रूमानियत काव्य संग्रह तन्हाई के तस्व्वुर, मुहब्बत एक इबादत, ख़ामोश निग़ाहें, जुदाई के जज़्बात, मुहब्बत का साया और दो सामाजिक काव्य संग्रह अमावस का चाँद और क़तरा-क़तरा दरिया आपकी नज़र कर रहा हूँ।

गुज़िश्ता वक़्त में शायरी अपने महबूब से ग़ुफ़्तगू का ज़रिया हुआ करती थी। मेरे यह काव्य संग्रह भी इसी सिम्त महज़ एक कदम है। ज़िन्दगी के सफ़र में मुहब्बत के कई रंग और मन्ज़र से मैं आशना और बावस्ता रहा। मसलन मिलन, तन्हाई, जुदाई, ख़ामोशी, इबादत, गिले-शिक़वे, बेरुख़ी, तौहीन, रन्जो-ग़म, बेचैनी, बेक़रारी, दीवानगी, बेख़यााली, बेख़ुदी, इज़हार, इक़रार, सुक़ून, वफ़ा, ज़फ़ा, बेवफ़ाई, रुसवाई, मज़बूरी, हसरत, ऐतबार, इन्तज़ार, मायूसी, बदहाली, क़शिश, चाहत, अहसास, रूठना-मनाना और भी बहुत कुछ। मुहब्बत को जिस तरह से जिया उसे ही शायरी की शक़्ल में तहरीर करने की कोशिश की है याने मुहब्बत के ज़ज़्बात, मुहब्बत के लिये। मुहब्बत के गुलशन को आबाद होने के लिये इज़हार, इक़रार, गुफ़्तगू और मुलाक़ातें इतनी ज़रूरी नहीं है जितना मुहब्बत के अहसास का अपने दिलो-दिमाग़ और ख़्वाबो ख़यालों में हमेशा ज़िन्दा रहना ज़रूरी है।

मेरे यह काव्य संग्रह उस पाक़ और बेइन्तहा मुहब्बत जो राधा-कृष्ण, हीर-

राँझा, सोनी-महिवाल, लैला-मजनू, शीरी-फ़रहाद की मुहब्बत जैसी है जिसमें निर्मल व पवित्र, इन्सानियत व हमदर्दी की भावनायें हैं और जो अजर-अमर है को समर्पित है जो बेहद मज़बूर,लाचार और बेबस होने के बावजूद भी अपने महबूब से मिलने और एकसार होने के लिये इतनी बेचैन और बेक़रार है कि ख़ास अपनों से और सारे ज़माने से बग़ावत के लिये तैयार है। मगर ज़माने के रस्मो-रिवाज़ और हालात से बहुत बेबस है। मुहब्बत में इस कदर बेख़ुदी का आलम है कि हर वक़्त अपने महबूब का ख़याल ही हमेशा दिल और दिमाग़ में रहता है। सांसों की हर धड़कन में उसका अहसास इतना ज़रूरी है कि उसके बिना ज़िन्दा रहना मुश्क़िल ही नहीं नामुमक़िन है। मुहब्बत में इस कदर जोश व जुनून और दीवानगी है कि जान कुर्बान करने को भी तैयार है। वादे व इरादे और जज़्बात व ख़यालात इस कदर बेहद मज़बूत है कि तमाम उम्र के लिये हर हालात में शरीके हयात बनकर हमसफ़र रहने को तैयार है। विरह की व्याकुल वेदना में अपने तन-मन से भी बेसुध और सारी कायनात से भी बेख़बर है। ख़्वाबों और ख़यालों में सिर्फ़ और सिर्फ़ हर वक़्त अपने महबूब का अक़्स और फलसफ़ा रहता है। मालूम है कि आख़िर में क्या होगा मगर मुहब्बत में दिल और दिमाग़ इतना दीवाना होता है कि किसी की भी नहीं मानता। उसे तो अपना महबूब ही सब कुछ नज़र आता है। यहाँ तक कि ख़ुदा से कम नहीं लगता। मुहब्बत के अहसास, क़शिश और चाहत को मुक़म्मिल तौर पर सही तरह से तहरीर करना बेहद मुश्क़िल है। महबूब का आशियाना जन्नत और ख़ुदाई से बेहतर लगता है। तन्हाई में महबूब की यादों में रहना ज़ियारत से कम नहीं है। जुदाई का वक़्त काले पानी की सज़ा से भी ज़्यादा है। यह कहना बेहद मुनासिब होगा कि मेरी मुहब्बत का यह आख़िरी और मुक़म्मिल फलसफ़ा है कि मेरा प्यार मेरे तन-मन, मेरे दिल औ दिमाग़ यानी मेरी ज़िन्दगी की कायनात का सम्पूर्ण संसार है।

मुहब्बत का यह ख़ूबसूरत सफ़र उस मन्ज़िल पर है जहाँ पर एक-दूसरे को शरिके हयात का अहसास रहता है इसलिये मैंने शायरी में ऐसे शब्दों को काम में लिया है जैसे सुहाग का सिन्दूर, करवा चौथ का व्रत, वरमाला, सात फेरे, सात वचन, सुहाग की सेज, घर परिवार, रस्मो रिवाज़ के बन्धन जो कि एक शादीशुदा ज़िन्दगी में ही यह सब कुछ होता है। निर्मल और पवित्र प्यार अजर और अमर मुहब्बत का मक़सद ऐसा होना चाहिये जिसमें शरीके हयात के ऐतबार, अहसास, जज़्बात, ज़रूरतों,

परेशानियों, मज़बूरियों और बेबसी के मुक़म्मल तसव्वुर दिलो-दिमाग़ में रहे और मुहब्बत जन्मों-जन्मों के लिये सात फेरों के बन्धन में बन्धने को बेहद बेताबी और बेसब्री से बेहद बैचैन और बेक़रार रहे। ख़ुदा ख़ैर करे कि मुहब्बत का यह सफ़र ज़िन्दगी के इस मुकाम पर हर हालात में ज़रूर पहुँचे जहाँ पर दो बदन एक जान हो जाते हैं और दुनिया से बेख़बर हो जाते हैं।

वैसे रूमानियत शायरी करना मुश्क़िल है। महफ़िल में सुनाना और दीवान की शक्ल देना तो और भी बेहद मुश्क़िल है। रूमानियत सुख़नवर को जिस नज़र से देखा जाता है वह शख़्सियत अच्छी नहीं मानी जाती है फिर भी मैं यह नादान ग़ुस्ताख़ी कर ख़तरा मोल ले रहा हूँ। उम्मीद है मेरी यह कोशिश आपको पसन्द आयेगी और आपके दिलो-दिमाग़ को सुक़ून मिलेगा। अपने दिली जज़्बातों से मुझे ख़बर करने की मेहरबानी ज़रूर करें। आपके जज़्बात, ख़यालात और सलाह मेरे लिये बहुत अहमीयत रखती है। इन काव्य संग्रहों में कुछ ऐसा लिखने में आ गया हो और जिससे किसी के दिल और दिमाग़ को ठेस पहुँचती है तो मैं तहेदिल से माफी माँगता हूँ। यक़ीनन ऐसा मेरा कोई इरादा नहीं था।

किसी एक विषय पर इतनी सारी रचनायें लिखना यदपि नामुमक़िन तो नहीं है मगर बेहद मुश्क़िल ज़रूर होता है इसलिए रचनाओं में शब्दों व सोच का दोहराव आ गया हो फिर भी यथा सम्भव इस दोहराव से बचने की तमाम कोशिशें की गई है। अधिकतर रचनायें ग़ज़ल जैसी विधा में है। ग़ज़ल के तमाम शेर एक ही विषय पर हों यह ज़रूरी नहीं होता है। फिर भी एक ही विषय पर ग़ज़ल जैसी विधा में रचनायें लिखकर मैनें नई परम्परा आरम्भ की है जो कि रचना की विषय वस्तु से पूरी तरह से तालमेल रखती है। जब रचनायें एक ही विषय पर अधिक मात्रा में हो जाती हैं तो रचना संसार भी विस्तृत हो जाता हैं। तब फिर नई-नई उपमायें और प्रतीकों का सृजन होता है। मैंने बहुत सारे ऐसे शब्दों, उपमाओं और प्रतीकों का प्रयोग किया है जिनकी बानगी इन रचनाओं में देखी जा सकती है। ऐसा है मेरा प्यार, महबूब का इस्तक़बाल, चाहत का चिन्तन, चाहत और क़शिश मेरे लिये, मुहब्बत मेरे लिये, प्रकृति और प्यार, बेबस दिल की पुकार, विरह की वेदना, क्या यह मुमक़िन होगा, शजर का फलसफ़ा, महबूब का तसव्वुर और मुहब्बत के सुबूत। अमूमन रूमानियत शायरी में ऐसा होता

नहीं है। उम्मीद है कि इन रचनाओं में इन उपमाओं से कुछ नया ज़रूर लगेगा और आप अच्छा महसूस करेंगे। हो सकता है भविष्य में यह रचनायें रूमानियत शायरी के सन्दर्भ में आम आदमी के लिये चर्चा का विषय बन जाये।

मेरी यह ख़्वाहिश और तमन्ना नहीं है, मेरी यह आरजू और मन्नत भी नहीं है कि, मेरी शायरी इल्मी अदब की महफ़िलों में शायरों के लिए मयार (उच्चस्तर) की हो व बज़्म में पायेदार (सम्मान जनक) भी हो। तमाम शायर मेरी शायरी पर तबादला-ए-ख़याल (विचार विमर्श) कर अपना बेशक़ीमती वक़्त बर्बाद करें। मेरी तो सिर्फ़ इतनी सी इल्तज़ा (प्रार्थना) और ख़ुदा से ताहीर (निर्मल) और पाक़ दुआ है कि मेरी शायरी में मेरे महबूब के निर्मल व पवित्र अहसास, हसीन व ख़ूबसूरत जज़्बात, ख़्वाब व ख़याल, यादें व मुलाक़ातें, दिल का ऐतबार, क़रार व इन्तज़ार, पाक़ दुआयें, चैन व सुकून, दास्तान व अरमान, आराधना व साधना, दिल की पुकार, विरह की वेदना, मधुर-मिलन, शजर का चिन्तन, दीदार व मिलन, त्यौहार व परिवार, रोम-रोम का आभास, तन-मन का विश्वास यानि मेरे महबूब के तन-मन के सम्पूर्ण संसार के सिवाय कुछ नहीं हो।

विस्तृत अर्थों और सन्दर्भों में मुहब्बत महज़ एक ख़याल और तसव्वुर नहीं है। हज़ारों सालों का इतिहास ग़वाह है कि प्यार की वज़ह से वो भी मुमक़िन हो गया जो बेहद नामुमक़िन था। हक़ीक़त और यथार्थ में कोई पारिवारिक और सामाजिक बन्धन में बन्धकर नर्क से भी बदतर ज़िन्दगी को जी रहा है। यदि उसे महज़ तसव्वुर में अपने महबूब से हसीन मुहब्बत का ख़ूबसूरत अहसास हो जाता है और अपना नर्क से भी बदतर जीवन जन्नत से भी बेहतर लगता है और अपना तन-मन, रोम-रोम और दिलो दिमाग़ इतना ख़ुशगवार लगता है कि जैसे सावन और बसन्त के मधुमास में गुलशन हरियाली और ख़ुश्बूओं से महक कर आबाद रहता है। मैं तो इन ख़यालात को किसी भी प्रकार से ग़लत नहीं समझता हूँ और मुहब्बत को अक़ीदत (श्रद्धा) समझकर इबादत (पूजा) करता हूँ।

'क्या यह मुमक़िन होगा' शीर्षक से जो रचनायें हैं उनमें प्यार की वज़ह से जो हालात तन-मन, दिल और दिमाग़, रोम-रोम और अपनी ज़िन्दगी पर जो बेहद गहरा असर होता है वह कैसे ख़त्म हो सकता है उनको बयान करने की कोशिश की है।

महबूब का इस्तक़बाल (स्वागत) शीर्षक से जो रचनायें है वह फ़िल्मी गीत 'बहारों फूल बरसाओ मेरा महबूब आया है' से प्रेरित है जिसमें यह लिखने की कोशिश की है जब महबूब प्रथम मधुर मिलन के लिये आता है उसके स्वागत में लिखी गई रचनाएँ हैं जिसमें महबूब के स्वागत में अनेक तरह के दिली जज़्बात, अहसास, सारी की सारी कायनात से इसरार और निवेदन, अभिनन्दन और अभिवादन तहरीर किये गये हैं। 'ऐसा है मेरा प्यार' शीर्षक से जो रचनायें हैं उनमें प्यार को कई तरह से उन उपमाओं से परिभाषित किया गया है जो दैनिक जीवन में काम आती है। इन रचनाओं में आधुनिक परिवेश की परम्परागत परिवेश से तुलना कर प्यार के अहसास और जज़्बात को अनूठा और निराला बनाये रखने की दिली ख़्वाहिशें और तमन्नायें हैं। और भी बहुत सारी रचनायें है जो एक ही विषय वस्तु पर एक ही शीर्षक पर अलग अलग तरह से बहुत बार लिखी गई है ताकि उस विषय वस्तु का सम्पूर्ण वर्णन किया जा सके। बेबस दिल की पुकार, मधुर मिलन, मन की मुरादें, महबूब का अक़्स, मुहब्ब्त का अहसास, मिलन की मन्नतें, महबूब का तसव्वुर, आदि तवील रचनायें है जिसमें मुहब्बत की दास्तान को मुक़म्मिल तौर पर तहरीर किया गया है। महबूब का तसव्वुर रचना में महबूब को माँ, पत्नी, बहन, दोस्त,औरत, बेटी और महबूब के तसव्वुर में ख़याल किया गया है।

काव्य संग्रहों के शिल्प में कई कमियाँ और गलतियाँ हो सकती हैं जानकार और समझदार इसे नज़र अन्दाज़ कर, एक आम आदमी बनकर अपने दिली जज़्बात और अहसास को अपने महबूब से गुफ़्तगू के रूप में देखेंगे तो आपको चैन और सुक़ून मिलेगा। दिल से किये गये काम में कुछ भी अच्छा बुरा नहीं होता सिर्फ़ और सिर्फ़ दिल की आवाज़ होती है जो अच्छी हो या न हो यक़ीनन बुरी तो नहीं होती। इन रचनाओं को इस सन्देश 'मेरा पैग़ाम अहले मुहब्बत है जहाँ तक पहुँचे बहुत पहुँचे' के रूप में देखा जाये।

इन काव्य संग्रहों के मुक़म्मिल होने में जो योगदान श्री भगवत सिंह जादौन 'मयंक' और श्री शम्भू दयाल विजयवर्गीय ने दिया है उसके लिये मैं उनका बेहद शुक्रगुज़ार हूँ। बेशक़ीमती अभिमत के लिये श्री विष्णु शर्मा 'विष्णु',श्री रामेश्वर शर्मा' रामू भैया', श्री अम्बिका दत्त चतुर्वेदी, श्री जितेन्द्र 'निर्मोही', जनाब शकूर

अनवर, श्री महेन्द्र 'नेह', श्री अरविन्द सोरल का तहेदिल से शुक्रिया अदा करना मैं अपना फ़र्ज़ समझता हूँ। शायरी को बेब साइट www.xyzsathi.com पर भी पढ़ा जा सकता है।

इस अश्आर के साथ अपनी ग़ुफ़्तगू को ख़त्म करता हूँ।

मुझे दुनियादारी का सिर्फ़ इतना सा ही ज्ञान है
मुहब्बत ही ख़ुशहाल ज़िंदगी के लिये विज्ञान है।

तहेदिल से आपका अपना

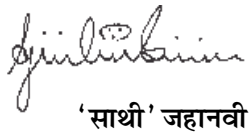

'साथी' जहानवी
(अजय कुमार शर्मा)
आम आदमी की मुहब्बत का शायर

प्रथम मंजिल, दीपश्री भवन
मल्टीपरपज स्कूल के सामने, गुमानपुरा कोटा 324007
मो. : 9414227447, 9214427447

वजूद के लिये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

अपने निर्मल और पवित्र
प्यार के लिये ऐसे ख़यालात रखना

जलती आग का तेज औ तपन
कितना भी ज्यादा क्यूँ नहीं हो
शीतल पानी की चन्द बून्दें भी
अपनी तासीर ज़रूर दिखाती है
हल्के-हल्के पानी की फुहारें भी
तेज अगन को ख़त्म कर देती है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

जज़्बात और अहसास की
तपन से प्यार को बनाये रखना

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
अपने हसीन और ख़ूबसूरत प्यार के लिये
ऐसी समझदारी हमेशा के लिये बनाये रखना

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

अपने निर्मल और पवित्र
प्यार के लिये ऐसे जज़्बात रखना

सालों से बर्फ़ जैसी बेज़ान मुहब्बत भी
यादों के ख़्याल से ज़िन्दा हो जाती है
मिलन और मुलाक़ातों की क़शिश से
मुहब्बत अमर व यादगार हो जाती है
वैसे ही शान्त शुद्ध पानी की तरह से
निर्मल-पवित्र मुहब्बत के अहसास भी
शक़, शिक़ायतों, रंज़िशों औ नफ़रतों से
मुहब्बत बेआबरू और बेइज्ज़त हो कर
भाप की तरह से हमेशा ख़त्म जाती है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

जज़्बात और अहसास की हसीन
मधुर यादों से प्यार को बनाये रखना

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
अपने हसीन और ख़ूबसूरत प्यार के लिये
ऐसी समझदारी हमेशा के लिये बनाये रखना।

चाहत और क़शिश

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
मेरे दिलो दिमाग़ में तुम क्या नहीं हो

रोशनी से जगमग दीपावली का पावन त्यौहार हो
सपनों के साजन के लिये मन में शिव अवतार हो
पिया से मिलने के लिये तीज के सोलह श्रृंगार हो
करवाचौथ के व्रत में, सुहागन के मन में ऐतबार हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
मेरे ख़्वाबों-ख़यालों के लिये क्या नहीं हो

आकाश में तारों की तरह से बेशुमार हो
समन्दर में पानी की तरह से बेहिसाब हो
कृष्ण मिलन में मीरा की तरह बेक़रार हो
योग साधना में शिव की तरह बेलगाम हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम मेरे रोम-रोम के लिये क्या नहीं हो

मुहब्बत में मेरे लिये शजर का चिंतन हो
शमा औ परवाने के जीवन का बंधन हो
पूजा और प्रार्थना से ईश्वर का मनन हो
दुआओं में इन्सानियत के लिये नमन हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
मेरे अंग अंग में तुम क्या नहीं हो

बसन्त की ख़ुश्बूओं का सतरंगी मधुमास हो
रिमझिम सावन में हरियाली के अहसास हो
शरद ऋतु में सूरज की तपन की आस हो
सहरा में प्यासे के लिये पानी की प्यास हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
मेरे अंग अंग में तुम क्या नहीं हो
तुम मेरे रोम रोम के लिये क्या नहीं हो
मेरे दिल और दिमाग़ में तुम क्या नहीं हो
मेरे तन और मन के लिये तुम क्या नहीं हो
मेरे ख़्वाब और ख़याल के लिये क्या नहीं हो

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
तुम मेरे जीवन के भाग्य विधाता हो
तुम मेरे जीवन के हसीन संसार हो
तुम मेरे जीवन के घर व परिवार हो
तुम मेरे जीवन के लिये सब कुछ हो
तुम मेरे जीवन के लिये सब कुछ हो।

चाहत के सुबूत

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
मेरे बेचैन दिल और दिमाग़ का
तन और मन से करो ऐसा ऐतबार

किसी के ख़यालात और अहसास हो जाना
मुलाक़ात की चाहत उसकी आस हो जाना
हज़ारों मीलों की दूरियाँ भी पास हो जाना
प्रेम का सागर उसके लिए प्यास हो जाना

यक़ीनन ऐसे तसव्वुर को ही तो
चाहत व क़शिश का ख़ुमार कहते हैं 'साथी'

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
मेरे बेचैन रोम-रोम के अहसास का
दिलो दिमाग़ से करो ऐसा क़रार व इज़हार

किसी के दिल की साँसों में शुमार हो जाना
ख़यालों में उसका तसव्वुर बेशुमार हो जाना
उस से मुलाक़ातों के लिए बेक़रार हो जाना
तन और मन में उस का ही ख़ुमार हो जाना

यक़ीनन ऐसे बेख़ुदी के आलम को ही तो
चाहत व क़शिश का प्यार कहते हैं 'साथी'

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
मेरे बेचैन अंग-अंग के जज़्बात का
ख़्वाबो-ख़यालों से करो ऐसा विसालेयार

किसी चेहरे का सुबह के पल आफ़ताब हो जाना
उस चेहरे का रोशन शाम का माहताब हो जाना
चाँदनी रात में उस चेहरे का ही ख़्वाब हो जाना
सारे दिन के सवालों का वो ही ज़वाब हो जाना

यक़ीनन ऐसे हसीन मन्ज़र को ही तो
मुहब्बत का सुन्दर संसार कहते हैं 'साथी'

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
मेरे बेचैन दिल और दिमाग़ का
तन व मन से करो ऐसा दीदारेयार

किसी का ख़ुदा से इबादत में वरदान हो जाना
दिल के मन्दिर में उसका ही भगवान हो जाना
ख़्वाबों औ ख़यालों में उसका अरमान हो जाना
उस की मुहब्बत और चाहत ही ईमान हो जाना

यक़ीनन ऐसी अक़ीदत को ही तो
मुहब्बत की इबादत का मयार कहते हैं 'साथी'।

ऐसा है मेरा प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

'रॉक म्युजिक' के इस ज़माने में
शास्त्रीय संगीत जैसा मेरा प्यार
जिसमें जज़्बातों की मधुर धुनें है
अहसास की क़शिश का साज़ है

'टेक्स्ट मैसेज' के इस ज़माने में
पोस्ट-कार्ड जैसा है मेरा प्यार
जिसमें कुछ नहीं लिख कर भी
बहुत कुछ समझे हुये जज़्बात हैं

'इन्टरनेट'-'ईमेल' के ज़माने में
अर्न्त-देशीय पत्र है मेरा प्यार
जिस में तहेदिल से लिखे हुये
इज़हारे-मुहब्बत के जज़्बात है

इस तरह के अहसास के साथ
मेरे दिलो-दिमाग़ में ऐसा है मेरा प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

'बेशक़ीमती उपहार' के ज़माने में
गुलाब के फूल जैसा है मेरा प्यार
जिस में अहसास है मेरे दिल के
और मेरे तन-मन की सुन्दरता है

'आलीशान बेडरूम' के ज़माने में
छोटा सा आशियाँ है मेरा प्यार
जिसमें हर रात को अहसास है
सुहाग रात के हसीन लम्हों का

'कोल्ड ड्रिंक्स' के इस ज़माने में
चाय व शर्बत जैसा है मेरा प्यार
जिस में मिठास है मेरी बातों की
बहाने हैं दिल की बात करने के

इस तरह के जज़्बात के साथ
मेरे रोम-रोम में ऐसा है मेरा प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

'विदेशी हनीमून' के इस ज़माने में
खेत और खलियान है मेरा प्यार
जिस में सादगी और शराफ़त है
और हमसफ़र होने के तसव्वुर हैं

'कृत्रिम सुन्दरता' की इस दुनिया में
शजर के चिन्तन जैसा है मेरा प्यार
जिसमें दरिया दिली सब कुछ देने की
फलसफ़ा है सब कुछ कुर्बान करने का

'डिस्को डान्स' के इस ज़माने में
लोक गीत व संगीत है मेरा प्यार
जिसमें रक़्सो रियाज़ है इश्क़ का
इबादत व ज़ियारत है मुहब्बत की

इस तरह के ख़यालात के साथ
मेरे तन और मन में ऐसा है मेरा प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

'स्कर्ट और जीन्स टॉपर' के इस ज़माने में
सलवार कुर्ता औ साड़ी जैसा है मेरा प्यार
जिसमें सुन्दरता व शालीनता संस्कारों की
मनमोहक छवि है सम्पूर्ण भारतीय नारी की

'बॉय और गर्ल फ्रेंड' के इस जमाने में
हीर राँझा, राधा कृष्ण जैसा है मेरा प्यार
जिसमें साथ जीने और मरने के वादे हैं
वफ़ाओं व हमदर्दी के सच्चे ख़यालात हैं

'महँगे शॉपिंग मॉल' के आधुनिक ज़माने में
गाँव का हाट-बाजार जैसा है मेरा प्यार
जिसमें जीवन-यापन की ज़रूरतें होती हैं
जो सस्ती और सुन्दर है मेरे घर के लिये

ऐसे आचार और विचार के साथ
मेरे ख़्वाबो-ख़्यालों में ऐसा है मेरा प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

'मसालेदार बाज़ारू' पत्रिकाओं के ज़माने में
साहित्यिक पत्र-पत्रिका जैसा है मेरा प्यार
जिसमें संस्कार और संस्कृति है भारत की
और रचनायें है सामाजिक प्रेम चिन्तन की

'परफ़्यूम' की तेज महक के आधुनिक ज़माने में
देशी इत्र की भीनी-भीनी ख़ुशबू है मेरा प्यार
जिसमें क़ुदरत के साथ अपनेपन के जज़्बात हैं
और अहसास है हसीन गुलों की ख़ूबसूरती का

'फास्ट फूड' के इस ज़माने में
रसोईघर का भोजन मेरा प्रेम
जिसमें महक है अपनेपन की
जो स्वादिष्ट और पौष्टिक है

ऐसे सोच और विचार के साथ
मेरे रोम-रोम में ऐसा है मेरा प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

'एयरकण्डीशन' मकान के आधुनिक ज़माने में
बसन्त के मधुमास का मौसम जैसा मेरा प्यार
जिसमें शीतल मनमोहक सुबह और शाम है
प्राकृतिक सुंदरता से आबाद दिलो-दिमाग़ है

एक दिन के 'नये साल के जश्न' के इस ज़माने में
हर रोज़ नये साल का जोशो-जुनून है मेरा प्यार
जिसमें प्यार की ख़्वाहिशें पूरी करने की सौग़ात है
और बेशुमार तमन्नायें है ख़ुशनुमा घर-परिवार की

सस्ते औ कामचलाऊ 'चायनीज़' सामानों के ज़माने में
ताउम्र साथ देने के लिये घरेलू वस्तुयें है मेरा प्यार
जिसमें रिश्तों की गरिमा और संबन्धों की महिमा है
जो कि हर तरह से उपयोगी है मेरी ज़िंदगी के लिये

इस तरह के जोश और जुनून के साथ
मेरे दिल और दिमाग़ में ऐसा है मेरा प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

'पर्सनल मोबाईल' के मॉर्डन ज़माने में
घर का इकलौता टेलीफोन मेरा प्यार
जिसमें पूरे घर व परिवार की ज़रूरतें
और सबकी ख़ुशियों का पूरा संसार है

'मॉडर्न विचारों' के इस ज़माने में
दकियानूसी ख़याल है मेरा प्यार
जिसमें मेरी वफ़ा व ईमानदारी है
रुसवाई से डरने के ख़यालात है

'महंगी कार' की सवारी के ज़माने में
साधारण साईकिल जैसा है मेरा प्यार
जिस में सादगी है मेरी शख़्सियत की
और ईमानदारी है मेरे दीनो ईमान की

ऐसे सादा जीवन के साथ
मेरे अंग-अंग में ऐसा है मेरा प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

'क्लब कल्चर व फैशन' के इस ज़माने में
ईश्वर की प्रार्थना व सत्संग है मेरा प्यार
जिसमें त्याग और समर्पण की भावनायें हैं
जो निर्मल व पवित्र होकर अजर-अमर है

आज की 'बाजारू राजनीति' के ज़माने में
विचारों व सिद्धान्तों की नीति है मेरा प्यार
जिसमें पारदर्शी ऐतबार है महबूब के लिये
क़ानून-क़ायदे हैं दिल के अहसास के लिये

'विदेशी ऐलोपेथी' महंगें इलाज के इस ज़माने में
प्राकृतिक औ आयुर्वेदिक चिकित्सा है मेरा प्यार
जिस में कोई भी दुष्प्रभाव नहीं और सुरक्षित है
जो जीवन को हमेशा के लिये निरोगी रखता है

ऐसे आचार और विचार के साथ
मेरे दिलो-दिमाग़ में ऐसा है मेरा प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

'आधुनिक होटल' के ज़माने में
महकता गुलिस्ताँ है मेरा प्यार
जिसमें ख़ुशबू की तरह आबाद
मधुर मुलाक़ात के सिलसिले हैं

'ख़ुदग़र्ज़ और मतलबी' इस ज़माने में
विरह की व्याकुल वेदना है मेरा प्यार
जिस में रिश्ता निभाने की हमदर्दी है
और ज़ान निसारी है मुहब्बत के लिये

'पूँजीवाद व सामंतवाद' के ज़माने में
समाजवाद की भावना है मेरा प्यार
जिस में अहसास हैं सहकारिता के
और ख़यालात हैं एक साथ रहने के

ऐसे जज़्बात व अहसास के साथ
मेरे तन और मन में ऐसा है मेरा प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

'फूहड़ मनोरंजन' फ़िल्मों के इस ज़माने में
संदेश देती कला फ़िल्मों जैसा मेरा प्यार
जिसमें भाव-पूर्ण अभिनय की हकीक़त है
और अर्थ पूर्ण संवादों की पूर्ण अदायगी है

एक दिन के 'फ्रेण्डशिप डे' के इस ज़माने में
दोस्ती के नाम हर रोज है मेरा मधुर प्यार
जिस में सारी ज़िन्दगी के लिये विश्वास है
बुरे वक़्त में मदद और हमदर्दी के प्रयास है

'वेलेनटाइन डे' की एक दिन की मुहब्बत के इस ज़माने में
बरसों की क़शिश और चाहत का अहसास है मेरा प्यार
जिसमें इज़हार है बेहिसाब बेक़रार दिल और दिमाग़ का
जज़्बात है एक-दूजे के ख़्वाबो-ख़यालों पे कुर्बान होने के

ऐसे ख़्वाबों और ख़यालों के साथ
मेरे तन और मन में ऐसा है मेरा प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

'धर्म सम्प्रदाय विशेष' के इस ज़माने में
इन्सानियत और भाईचारा है मेरा प्यार
जिसमें पवित्र भावनायें हैं सब धर्मों की
सारे त्यौहारों की ख़ुशियाँ सब के लिये

'नफ़रत और रक्त रंजित क्रान्ति' के ज़माने में
अम्न और चैन का क़रार जैसा है मेरा प्यार
जिसमें सारे संसार की ख़ुशियों का संदेश है
सोच है 'सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामया'

'एल.ई.डी.लाईट' के इस ज़माने में
चिमनी और लालटेन है मेरा प्यार
जिसमें बेहिसाब चाहत का नूर है
और बेशुमार क़शिश की रोशनी है

ऐसे चिन्तन व मनन के साथ
मेरे रोम रोम में ऐसा है मेरा प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

'वॉट्स-अप मेसेज़' के इस ज़माने में
मधुर मिलन की क़शिश है मेरा प्यार
जिसमें बेसब्र इन्तज़ार के हसीं पल है
महबूब से मिलने की दिली तमन्नायें है

'फेसबुक' के अंज़ाने ज़माने में
मिलन की क़शिश है मेरा प्यार
जिसमें पाक़ दामन रिश्तों की
सच्चाई औ हकीक़त की बातें हैं

'बुफे डिनर' के इस आधुनिक ज़माने में
पंगत औ लंगर का भोजन है मेरा प्यार
जिसमें पवित्रता औ समानता के भाव हैं
और सोच सबके साथ मिलकर रहने की

ऐसे तसव्वुर और फलसफ़े के साथ
मेरे ख़्वाबो-ख़यालों में ऐसा है मेरा प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

'अर्थहीन फ़िल्मी गानों' के ज़माने में
गीत, कविता और ग़ज़ल है मेरा प्यार
जिसमें क़शिश है दिली जज़्बातों की
ख़याल औ अहसास है पाक़ वफ़ा के

'विदेशी मेकअप' के आधुनिक ज़माने में
हल्दी-चन्दन का उबटन है मेरा प्यार
जिसमें सोलह शृंगार की ख़ूबसूरती है
और निर्मल व पवित्र मन की भावना है

'कृत्रिम सुन्दरता' के आधुनिक ज़माने में
शजर का हरियाला चिंतन है मेरा प्यार
जिसमें दरिया दिली है सब कुछ देने की
फलसफ़ा है सब कुछ कुर्बान कर देने का

ऐसी ख़्वाहिशों और तमन्नाओं के साथ
मेरे दिल और दिमाग़ में ऐसा है मेरा प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

सारी सम्भावनाओं से युक्त 'कम्प्यूटर युग' के ज़माने में
कलम से लिखी ख़ूबसूरत इबारत जैसा है मेरा प्यार
जिसमें कोई भी गुंजाइश नहीं है फेरबदल करने की
क्योंकि सोच-समझकर दिल पर लिखी गई है तहरीर

'आर्टिफिशियल ज्वैलरी' के कृत्रिम ज़माने में
शुद्ध सोने और कुंदन सा ख़रा है मेरा प्यार
जिस में शुद्धता है मेरे दिल और दिमाग़ की
जो सदाबहार है हर वक़्त में हर हाल के लिये

ऐसे दीन और ईमान के साथ
मेरे तन और मन में ऐसा है मेरा प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
मेरे रोम-रोम में ऐसा है मेरा प्यार
मेरे अंग-अंग में ऐसा है मेरा प्यार
मेरे तन और मन में ऐसा है मेरा प्यार
मेरे ख़्वाबो-ख़यालों में ऐसा है मेरा प्यार
मेरे दिल और दिमाग़ में ऐसा है मेरा प्यार
मेरी इबादत औ जियारत में ऐसा है मेरा प्यार
मेरे अहसास और जज़्बातों में ऐसा है मेरा प्यार
मेरी ख़्वाहिशों और तमन्नाओं में ऐसा है मेरा प्यार।

---

1. साज़=वाध्य यन्त्र **2.** इज़हार=प्रकट करना **3.** तसव्वुर=ख़याल **4.** शजर=पेड़ **5.** दरिया=नदी **6.** फलसफ़ा=चिन्तन **7.** रक़्सो रियाज़=नृत्य अभ्यास **8.** दकियानुसी= संकुचित सोच **9.** रूसवाई=बदनामी **10.** शख़्शियत=व्यक्तित्व **11.** दीनो ईमान=धार्मिक चरित्र **12.** इबादत=प्रार्थना **13.** ज़ियारत=तीर्थ यात्रा **14.** गुलिस्ताँ=गुलशन **15.** जान निसारी=जान कुर्बान करना **16.** निरामया=निरोगी **17.** पाक़= पवित्र **18.** तसव्वुर=विचार **19.** शजर=पेड़ **20.** दरिया=नदी **21.** तहरीर और इबारत=लिखावट।

हसीन और ख़ूबसूरत लम्हें

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मेरे ख़ूबसूरत और मधुर सनम
पवित्र प्रेम ही अब हमारा धरम
मधुर मिलन का इंतज़ार ख़त्म
हमारा साथ रहेगा जन्म-जन्म

एक-दूजे की बाँहों में हसीं मिलन
हमारी साँसों में शोलों जैसी तपन
निर्मल हो गया हमारा तन व मन
शान्त हो गया हमारा बेचैन बदन

सुनहरी आभा लिए काया कंचन
रोम-रोम ख़ुश्बू से महकता चन्दन
हसीन अहसास से प्रेम का मन्थन
दिल व दिमाग़ में प्यार का गुन्जन

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
इस तरह के हसीन अहसास के साथ
मेरे तन और मन में ऐसे कर जाओ गमन

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

एक-दूजे के हसीं अहसास का चिन्तन
दो बदन का एक जान होकर बन्धन
मधुर व रसीले गुलाबी होठों के चुम्बन
दिल व दिमाग़ में ह्रदय स्पर्शी स्पन्दन

हसीन और रंगीन मौसम होगा सुहाना
प्यार में हमारा तन-मन होगा मस्ताना
उफनती दरिया का समन्दर में समाना
मदहोशी के आलम में तन-मन बेगाना

मदहोश निग़ाहों के इशारों से बुलाना
सुहाग की सेज पे निर्मल मन सुलाना
हसीन प्यार को एक-दूजे पर लुटाना
प्यार में समाकर कायनात को भुलाना

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
इस तरह के ख़ूबसूरत जज़्बात के साथ
मेरे रोम-रोम को इस तरह कर जाओ मगन

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मेरे आँगन में हरियाला सावन
बसन्त के मधुमास का साजन
निर्मल प्यार का रिश्ता पावन
ख़ुशी से आबाद हमारा दामन

मेरे तन व मन के सुन्दर उपवन
मेरे दिल में महकते हुए गुलशन
मेरे रोम-रोम में ख़ुशबू के चमन
मेरे अंग-अंग में सावन की पवन

एक-दूसरे के प्यार को नमन
प्रेमानंद की ओर हमारा गमन
सुहागरात जैसा हमारा शयन
हसीन अहसास में दोनों मगन

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
ऐसे निर्मल और पवित्र प्यार के साथ
मेरे अंग अंग को ऐसे कर जाओ गुलशन

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मधुर आग्रह से प्रणय का आमन्त्रण
हसीं अहसास से प्रेम का निमन्त्रण
निर्मल मन से एक-दूजे का समर्पण
पवित्र प्यार को तन-मन का अर्पण

नीले नयनों में नशीला प्यारा सागर
रोम-रोम में उफनती प्रेम की गागर
तन व मन में प्रेम निवेदन का आदर
सफल, सुखी दाम्पत्य को नमन् सादर

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
ऐसे ख़्वाबों और ख़यालों के साथ
मेरी ज़िन्दगी को ऐसे कर जाओ चमन।

---

1. कायनात=संसार

मुहब्बत की ख़्वाहिशें

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
ऐसी पवित्र और निर्मल भावनायें
हमारे अमर प्यार में गुना हज़ार रहे

दोनों के जीवन में ख़ुशियाँ बेशुमार रहे
दिल औ दिमाग़ से कभी न बेज़ार रहे
एक-दूजे के दिल में बेइन्तहा प्यार रहे
रोशन क़िस्मत को हमारा इन्तज़ार रहे

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
हम दोनों के ख़ूबसूरत प्यार की
ऐसी मंगल कामनायें सदाबहार रहें

हमारे दिलो-दिमाग़ में हमेशा प्यार बरक़रार रहे
जन्मों-जन्मों तक हमें साथ रहने का क़रार रहे
हमें एक-दूजे की बाँहों में समाने का इंतज़ार रहे
ख़ूबसूरत अहसास की तन औ मन में बहार रहे

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार

इस तरह के अहसास और जज़्बात
हमारे हसीन ख़्वाबों और ख़यालों से
हमारे ख़ूबसूरत प्यार की ज़िंदगी में
ख़ुशहाली बेहिसाब और बेशुमार रहे

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के संपूर्ण संसार
हम दोनों तमाम उम्र इस तरह से
ख़ूबसूरत मुहब्बत में विसाले यार रहे

एक-दूजे की मुहब्बत हमको अमानत रहे
एक-दूसरे की ग़लतियों की ज़मानत रहे
एक-दूजे के दिल में मुहब्बत इबादत रहे
हमारे पवित्र प्यार का सफ़र ज़ियारत रहे

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
हमारी पवित्र और अमर मुहब्बत
दिल की दुआओं से इतनी असरदार रहे

मुस्तक़बिल हमारी तमन्नाओं का आफ़ताब रहे
ज़माने में सम्मान हमारे प्यार का माहताब रहे
प्यार की ख़ुमारी व मस्ती में हमारा शबाब रहे
आशिकों में हमारी मुहब्बत क़ाबिले आदाब रहे

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन और मन के सम्पूर्ण संसार

इस तरह के अहसास और जज़्बात
हमारे हसीन ख़्वाबों और ख़यालों से
हमारे ख़ूबसूरत प्यार की ज़िन्दगी में
ख़ुशहाली बेहिसाब और बेशुमार रहे।

---

1. बेज़ार=उदास **2.** बरकरार=कायम **3.** क़रार=अनुबन्ध **4.** बेशुमार=अत्यधिक **5.** आफ़ताब=सूरज **6.** माहताब=चन्द्रमा **7.** फ़लसफ़ा=चिन्तन **8.** विसाले यार=महबूब का मिलन **9.** इबादत=प्रार्थना **10.** ज़ियारत=तीर्थयात्रा।

ईश्वर का अहसान

हे! ईश्वर मुझे आपसे
कोई भी गिला और शिक़वा नहीं है

किसी भी प्रकार की साधनहीनता का
किसी भी प्रकार की ग़रीबी व ग़म का
किसी भी प्रकार के दुख औ कष्टों का
किसी भी प्रकार के जुल्म व सितम का

क्योंकि आपने मुझे ऐसे महबूब का
बेशुमार अजर और अमर प्यार दिया है

जिसकी ख़्वाहिशों और तमन्नाओं में
मेरे जीवन-साथी होने का इक़रार है
जिसकी दुआओं व मनोकामनाओं में
मेरा ही ख़ुशहाल घर औ परिवार है
जिसके पवित्र तन-मन के मन्दिर में
मेरी निर्मल मुहब्बत का ही संसार है

हे! ईश्वर इस लिये मुझे आपसे
कोई भी अफ़सोस और मलाल नहीं है

हे! ईश्वर मुझे आपसे
कोई भी गिला और शिक़वा नहीं है

किसी भी प्रकार के दर्द और ग़मों का
किसी भी प्रकार के सुख के अभाव का
किसी भी प्रकार मेरा बेइज़्ज़त होने का
किसी भी प्रकार से विरह के प्रभाव का

क्योंकि आपने मुझे ऐसे महबूब का
निर्मल और पवित्र मधुर प्यार दिया है

जिसके निर्मल व पवित्र तन-मन में
मेरा प्यार उसके लिये आराधना है
जिसके दिल व दिमाग़ की दुआ में
निरोगी-काया होने की उपासना है

हे! ईश्वर इस लिये मुझे आपसे
कोई भी अफ़सोस और मलाल नहीं है

हे! ईश्वर मुझे आपसे
कोई भी गिला और शिक़वा नहीं है

किसी भी तरह की बेहाली का
किसी भी भूख और प्यास का
किसी भी तरह के अपमान का
किसी भी तरह की बदहवास का

क्योंकि आपने मुझे ऐसे महबूब का
अजर और अमर बेमिसाल प्यार दिया है

जिसके सच होते हुये सभी सपनों में
मेरे घर औ परिवार का ही निवास है
जिसके दिल और दिमाग़ में मेरे लिये
मेरी हर ज़रूरतों के दिली अहसास हैं

हे! ईश्वर इस लिये मुझे आपसे
कोई भी अफ़सोस और मलाल नहीं है

हे! ईश्वर मुझे आपसे
कोई भी गिला और शिक़वा नहीं है

किसी भी प्रकार की परेशानी का
किसी भी प्रकार की बदहाली का
किसी भी प्रकार की तंगहाली का
किसी भी प्रकार की बेक़रारी का

क्योंकि आपने मुझे ऐसे महबूब का
निर्मल और पवित्र बेशुमार प्यार दिया है

जिसके निर्मल तन और मन में
मेरे सपने साकार करने के लिये
तन-मन में वर माला का हार है
सारे जीवन साथ निभाने के लिये
सात वचनों के बंधन का क़रार है
मिलन को यादगार करने के लिये
सुहाग की सेज पे मेरा इंतज़ार है

हे! ईश्वर इस लिये मुझे आपसे
कोई भी अफ़सोस और मलाल नहीं है

हे! ईश्वर मुझे आपसे
कोई भी गिला और शिक़वा नहीं है

किसी भी तरह की बेवफ़ाई का
किसी भी रूप में जगहँसाई का
किसी भी प्रकार की तन्हाई का
किसी भी प्रकार की जुदाई का

क्योंकि आपने मुझे ऐसे महबूब का
अजर और अमर मधुर प्यार दिया है

जिसके निर्मल दिल और दिमाग़ में
मेरे सारे जीवन के लिए विश्वास है
जिसके पवित्र-निर्मल तन औ मन में
जीवन-साथी बने रहने का आभास है
जिस के अंग-अंग और रोम-रोम में
मेरी ख़ूबसूरत चाहत का अहसास है
जिसके हसीन ख़्वाबों औ ख़यालों में
मधुर मिलन के सपनों का निवास है

हे! ईश्वर इस लिये मुझे आपसे
कोई भी अफ़सोस और मलाल नहीं है

हे! ईश्वर मुझे आपसे
कोई भी गिला और शिक़वा नहीं है

किसी भी प्रकार के ज़ुल्मो-सितम का
किसी प्रकार के अपयश और ग़म का
किसी भी प्रकार की विरह वेदना का
किसी भी तरह के नफ़ा-नुकसान का

क्योंकि आपने मुझे ऐसे महबूब का
निर्मल और पवित्र समझदार प्यार दिया है

जिसके दिल में साजन का इन्तज़ार है
विचलित विरह की वेदना में बेक़रार है
मन की दुआओं में मिलन की पुकार है
जन्म-जन्म के साथ के लिये ऐतबार है

हे! ईश्वर इस लिये मुझे आपसे
कोई भी अफ़सोस और मलाल नहीं है

हे! ईश्वर मुझे आपसे
कोई भी गिला और शिक़वा नहीं है

किसी भी प्रकार से तंगहाली का
किसी भी प्रकार से जुदाईयों का
किसी भी प्रकार की बदनामी का
किसी भी प्रकार की अपंगता का
किसी भी प्रकार की कुरूपता का

क्योंकि आपने मुझे ऐसे महबूब का
जन्मों-जन्मों के लिये अमर प्यार दिया है

जिसके निर्मल दिल औ दिमाग़ में
मेरे लिये करवा चौथ का त्यौहार है
जिसके तन औ मन के विश्वास में
पवित्र सावन के सोलह सोमवार हैं
उसकी निर्मल सोच और विचार में
मेरा जीवन उस के लिये साधना है
जिसके मज़बूत वादों और इरादों में
मेरी ख़ुशहाली के लिये उपासना है

हे! ईश्वर इस लिये मुझे आपसे
कोई भी अफ़सोस और मलाल नहीं है

हे! ईश्वर मुझे आपसे
कोई भी गिला और शिक़वा नहीं है

किसी भी प्रकार के दर्दों-ग़म का
किसी भी प्रकार की बेचैनियों का
किसी भी प्रकार से बीमारियों का
किसी भी प्रकार की बदहाली का
किसी भी प्रकार की परेशानी का

क्योंकि आपने मुझे ऐसे महबूब का
अजर और अमर बेशुमार प्यार दिया है

जिसके निर्मल और पवित्र अहसास में
सिर्फ़ और सिर्फ़ मेरा ही तो आभास है
उसके मन में रिमझिम बरसते मौसम में
मेरे लिये सतरंगी बसन्त का मधुमास है

आँगन को ख़ुशियों से महकाने के लिये
मेरे चैन व सुक़ून में सावन की बहार है
मेरी मुहब्बत को महफूज़ करने के लिये
इंसानियत में हमदर्द होने का ऐतबार है

हे! ईश्वर इस लिये मुझे आपसे
कोई भी अफ़सोस और मलाल नहीं है

हे! ईश्वर मुझे आपसे
कोई भी गिला और शिक़वा नहीं है

किसी भी प्रकार की जुदाई का
किसी भी प्रकार की तबाही का
किसी भी प्रकार की तन्हाई का
किसी भी प्रकार की बेवफ़ाई का

क्योंकि आपने मुझे ऐसे महबूब का
निर्मल और पवित्र प्यार का उपहार दिया है

जिसके पवित्र अंग-अंग और रोम-रोम में
मेरे ख़ूबसूरत निर्मल प्यार का अहसास है
जिसके दिन-रात के ख़्वाबों व ख़यालों में
मधुर मिलन के हसीन सपनों का प्रवास है
जिसकी आँखों में साजन का इन्तज़ार है
जो विचलित विरह की वेदना में बेक़रार है
जिसकी दिली दुआ में मिलन की पुकार है
जन्म-जन्म का साथ निभाने का ऐतबार है

हे! ईश्वर इस लिये मुझे आपसे
कोई भी अफ़सोस और मलाल नहीं है।

अर्थहीन नहीं है प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
प्यार से तन-मन में ऐसा हो जाता है

तन औ मन में प्राणों का प्रसार हो जाता है
अंग अंग में ख़ुशियों का संचार हो जाता है
दिलो-दिमाग़ बसन्त का संसार हो जाता है
रोम-रोम में सावन का त्यौहार हो जाता है

तन-मन में सावन का हरियाला सोमवार हो जाता है
दिल में दीपावली की रोशनी का त्यौहार हो जाता है
रोम-रोम होली के रंगों से मन सदाबहार हो जाता है
करवा चौथ में दिल व दिमाग़ को ऐतबार हो जाता है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
इसलिये अर्थहीन नहीं है हमारा प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन व मन के सम्पूर्ण संसार
प्यार में ज़िन्दगी का सफ़र ऐसा हो जाता है

महबूब का ख़ूबसूरत अहसास ज़िन्दगानी हो जाती है
दुनिया में अजर व अमर प्रेम की कहानी हो जाती है
मीरा कृष्ण की व लैला मजनूं की दीवानी हो जाती है
बेख़ुदी में तन व मन से ज़िन्दगी मस्तानी हो जाती है

समंदर में लहरों की तरह बेशुमार प्यार की रवानी हो जाती है
महबूब के जज़्बातों में मछली के लिये निर्मल पानी हो जाती है
मुहब्बत में इन्सानियत शजर के चिंतन की ज़ुबानी हो जाती है
रस्मो-रिवाज़ की रिवायतें और तहज़ीब हिन्दुस्तानी हो जाती है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
इसलिये अर्थहीन नहीं है हमारा प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन व मन के सम्पूर्ण संसार
प्यार में दिल और दिमाग़ ऐसा हो जाता है

संग दिल भी रहम दिल इन्सान हो जाता है
हैवान व शैतान भी फिर भगवान हो जाता है
दो रूह का मिलन दिली अरमान हो जाता है
महबूब का तसव्वुर दीन व ईमान हो जाता है

ख़ामोश निग़ाहें इशारों में बोलती ज़ुबान हो जाती है
मन की मनो कामना प्रेम के लिये कुरान हो जाती है
मिलन की ख़्वाहिशें औ तमन्नायें अज़ान हो जाती हैं
यादगार हसीन मुलाक़ातें अनमोल दीवान हो जाती हैं

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
इसलिये अर्थहीन नहीं है हमारा प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
प्यार से ख़यालों में ऐसा हो जाता है

हसीं मुलाक़ातों के लिये इन्तज़ार हो जाता है
मुश्क़िल राहों में जीने का आधार हो जाता है
तपते सहरा में गुलशन की बहार हो जाता है
ख़ुशहाल जीवन का घर-परिवार हो जाता है

निर्मल और पवित्र मन का विचार हो जाता है
अजर औ अमर होने का अधिकार हो जाता है
जन्नत के हसीं नज़ारों का दीदार हो जाता है
मुहब्बत को ख़ुदा होने का ऐतबार हो जाता है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
इसलिये अर्थहीन नहीं है हमारा प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
प्यार में दिली ऐतबार ऐसा हो जाता है

हसीन कल्पनायें मन में साकार हो जाती है
मन के मन्दिर की मूरत आकार हो जाती है
मुहब्बत पाक़ इबादत की मज़ार हो जाती है
मनोकामना पूरी होने की पुकार हो जाती है

तन व मन ख़ुशहाल सपनों पे सवार हो जाता है
दिल हसीं ख़्वाबो ख़यालों में बेशुमार हो जाता है
रोम रोम में हसीन चाहतों का ख़ुमार हो जाता है
अंग-अंग में मधुर प्रेम रस का संचार हो जाता है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
इसलिये अर्थहीन नहीं है हमारा प्यार।

---

1. रवानी=रफ़्तार **2.** शजर=पेड़ **3.** रिवायत=परम्परा **4.** संगदिल=पत्थर दिल **5.** तसव्वुर=ख़याल **6.** अज़ान=प्रार्थना के लिये पुकार **7.** दीवान=काव्य संग्रह **8.** सहरा=रेगिस्तान **9.** दीदार=दर्शन **10.** इबादत=प्रार्थना **11.** मज़ार=समाधी स्थल **12.** ख़ुमार=मदहोशी।

क्या यह मुमक़िन होगा

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मुहब्बत का बसंत के मौसम जैसा
मधुमास का मधुर सावन हो जाना
पवित्र प्यार के सागर में नहा कर
तन और मन का पावन हो जाना

मुहब्बत के सतरंगी रंगों में रंगकर
दिलो-दिमाग़ का फागुन हो जाना
ख़ूबसूरत अहसास और ख़यालों से
मुहब्बत का हसीन दामन हो जाना

मुहब्बत का दीन और ईमान हो जाना
महबूब का चाहत में भगवान हो जाना
मन्दिर सा महबूब का मकान हो जाना
महबूब की ज़ुबान का अज़ान हो जाना

यह सब कुछ मुमक़िन हो गया है
तो फिर क्या ये मुमक़िन होगा कि
स्वर्ग से भी सुंदर इतना सब कुछ
दिल व दिमाग़ और तन व मन से
रोम रोम के अहसास से सब कुछ
क्यों और कैसे ख़त्म हो सकता है

हाँ यह इतना सब कुछ उस वक़्त
हमेशा के लिये ख़त्म हो जायेगा
जब दोनों हमेशा-हमेशा के लिये
चिर निद्रा में दोनों ही एक साथ
इस वफ़ा उम्मीद और ऐतबार से
बेचैन-बेबस होकर सो जायेंगे कि
हम दोनों इस जन्म में तो न सही
अगले जन्म में ज़रूर-ज़रूर मिलेंगे

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

दिल की आवाज़ का आशना हो जाना
चाहत में तन-मन से दीवाना हो जाना
दिल और दिमाग़ का बेग़ाना हो जाना
एक दूजे का ख़याल मस्ताना हो जाना

चाहत औ क़शिश में हम दोनों का लाचार हो जाना
एक दूसरे के दिल और दिमाग़ पर ऐतबार हो जाना
गिले व शिक़वे दूर करके हमारा समझदार हो जाना
एक दूसरे की परेशानियों के लिये वफ़ादार हो जाना

यह सब कुछ मुमक़िन हो गया है
तो फिर क्या ये मुमक़िन होगा कि
दीन और ईमान से इतना सब कुछ
मज़बूर दिल की पुकार से सब कुछ
सात वचनों के बन्धन से सब कुछ
हसीन अहसास से इतना सब कुछ
क्यों और कैसे ख़त्म हो सकता है

हाँ यह इतना सब कुछ उस वक़्त
हमेशा के लिये ख़त्म हो जायेगा
जब दोनों हमेशा-हमेशा के लिये
चिर निद्रा में दोनों ही एक साथ
इस वफ़ा उम्मीद और ऐतबार से
बेचैन-बेबस होकर सो जायेंगे कि
हम दोनों इस जन्म में तो न सही
अगले जन्म में ज़रूर-ज़रूर मिलेंगे

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

प्यार की क़शिश व चाहत से तन-मन में ख़ुमार हो जाना
ख़यालों से बेख़ुदी में दिल औ दिमाग़ का मज़ार हो जाना
एक दूसरे के बिना ख़ुशहाल जीवन में अन्धकार हो जाना
एक दूसरे के बिना धन-दौलत के ख़ज़ाने बेकार हो जाना

एक दूसरे का बेवज़ह हँसना और हँसाना
एक दूसरे को देखकर हमारा मुस्कुराना
नाराज़गी से आपस में रूठना औ मनाना
एक दूसरे से प्यार में चिड़ना व चिड़ाना

जब ये सब कुछ मुमक़िन हो गया है
तो फिर क्या यह मुमक़िन होगा कि
हँसी और मज़ाक से इतना सब कुछ
आशा औ विश्वास से इतना सब कुछ
पवित्र व निर्मल अंग-अंग से सब कुछ
जोश और जुनून से इतना सब कुछ
कब, क्यों औ कैसे ख़त्म हो सकता है

हाँ यह इतना सब कुछ उस वक़्त
हमेशा के लिये ख़त्म हो जायेगा
जब दोनों हमेशा-हमेशा के लिये
चिर निद्रा में दोनों ही एक साथ
इस वफ़ा उम्मीद और ऐतबार से
बेचैन बेबस होकर सो जायेंगे कि
हम दोनों इस जन्म में तो न सही
अगले जन्म में ज़रूर-ज़रूर मिलेंगे

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मुहब्बत के रिश्ते का दिल से घर व परिवार हो जाना
रस्म और रिवाज़ से करवा चौथ का त्यौहार हो जाना
पाक़ मुहब्बत का बन्धन मंगलसूत्र का क़रार हो जाना
दिलो-दिमाग़ में ऐतबार से वरमाला का हार हो जाना

रुख़सार का खिलता हुआ गुलाब हो जाना
तन-मन का मचलता हुआ शबाब हो जाना
प्रेम का प्याला महकती हुई शराब हो जाना
चेहरे का चाँदनी रातों का ज़वाब हो जाना

जब यह सब कुछ मुमक़िन हो गया है
तो फिर क्या यह मुमक़िन होगा कि
शजर के चिन्तन से इतना सब कुछ
गीत ग़ज़ल व शेरो-सुख़न से सब कुछ
नग्मों और तरानों से इतना सब कुछ
शक़ औ शिक़ायतों से इतना सब कुछ
कब, क्यों और कैसे ख़त्म हो सकता है

हाँ यह इतना सब कुछ उस वक़्त
हमेशा के लिये ख़त्म हो जायेगा
जब दोनों हमेशा-हमेशा के लिये
चिर निद्रा में दोनों ही एक साथ
इस वफ़ा उम्मीद और ऐतबार से
बेचैन-बेबस होकर सो जायेंगे कि
हम दोनों इस जन्म में तो न सही
अगले जन्म में ज़रूर-ज़रूर मिलेंगे

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

विरह की व्याकुल वेदनाओं में हम दोनों का तड़पना
दो बदन का एक जान होने के लिये हमेशा मचलना
प्यार पाने औ देने के लिये हमारा आपस में झगड़ना
एक दूजे के दिली ज़ज्बात के लिये ख़ुद को बदलना

प्यार के लिये अपने घर परिवार से भी बग़ावत करना
एक-दूजे की ख़्वाहिश के लिये ख़ुद से अदावत करना
एक-दूजे की ख़ुशियों के लिये ख़ुदा से इबादत करना
रुसवाईयों से एक दूसरे की हर वक़्त हिफ़ाज़त करना

जब यह सब कुछ मुमक़िन हो गया है
तो फिर क्या यह मुमक़िन होगा कि
अजर अमर प्यार से इतना सब कुछ
ख़्वाबों व ख़यालों से इतना सब कुछ
परिवार के अहसास से इतना सब कुछ
अपने-अपने जीवन में इतना सब कुछ
कब, क्यों और कैसे ख़त्म हो सकता है

हाँ यह इतना सब कुछ उस वक़्त
हमेशा के लिये ख़त्म हो जायेगा
जब दोनों हमेशा-हमेशा के लिये
चिर निद्रा में दोनों ही एक साथ
इस वफ़ा उम्मीद और ऐतबार से
बेचैन-बेबस होकर सो जायेंगे कि
हम दोनों इस जन्म में तो न सही
अगले जन्म में ज़रूर-ज़रूर मिलेंगे

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

तन और मन से एक दूसरे की अमानत हो जाना
एक-दूजे की ग़लतियों के लिये ज़मानत हो जाना
ज़रूरतों के वक़्त एक दूसरे पर इनायत हो जाना
एक-दूजे की ख़्वाहिश के लिये ज़ियारत हो जाना

अल सुबह महबूब के दीदार का ही आफ़ताब हो जाना
सुहावनी चाँदनी रातों में महबूब का माहताब हो जाना
यादों का झिलमिलाते तारों के जैसे बेहिसाब हो जाना
एक दूसरे की कायनात का मुक़म्मिल ज़वाब हो जाना

यह सब कुछ मुमक़िन हो गया है
तो फिर क्या ये मुमक़िन होगा कि
स्वर्ग से भी सुन्दर इतना सब कुछ
दिल व दिमाग़ और तन व मन से
रोम-रोम के अहसास से सब कुछ
क्यों और कैसे ख़त्म हो सकता है

हाँ यह इतना सब कुछ उस वक़्त
हमेशा के लिये ख़त्म हो जायेगा
जब दोनों हमेशा-हमेशा के लिये
चिर निद्रा में दोनों ही एक साथ
इस वफ़ा उम्मीद और ऐतबार से
बेचैन-बेबस होकर सो जायेंगे कि
हम दोनों इस जन्म में तो न सही
अगले जन्म में ज़रूर-ज़रूर मिलेंगे

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

प्यार के लिये रस्मो-रिवाज़ का बेकार हो जाना
मुलाक़ातों के लिये दिन-रात इन्तज़ार हो जाना
साथ जीने और मरने के लिये इक़रार हो जाना
एक दूसरे को देखे बिना हमारा बेज़ार हो जाना

हताशा व निराशा के वक़्त में प्यार का चराग़ हो जाना
रोम-रोम में अंकुरित होकर मुहब्बत का पराग हो जाना
मुहब्बत के रंग में रंग कर तन-मन का बेदाग़ हो जाना
निर्मल व पवित्र होकर दिलो दिमाग़ का बेराग हो जाना

यह सब कुछ मुमक़िन हो गया है
तो फिर क्या ये मुमक़िन होगा कि
दीन और ईमान से इतना सब कुछ
हँसी औ मज़ाक में इतना सब कुछ
सात वचनों के बन्धन से सब कुछ
हसीन अहसास से इतना सब कुछ
क्यों और कैसे ख़त्म हो सकता है

हाँ यह इतना सब कुछ उस वक़्त
हमेशा के लिये ख़त्म हो जायेगा
जब दोनों हमेशा-हमेशा के लिये
चिर निद्रा में दोनों ही एक साथ
इस वफ़ा उम्मीद और ऐतबार से
बेचैन-बेबस होकर सो जायेंगे कि
हम दोनों इस जन्म में तो न सही
अगले जन्म में ज़रूर-ज़रूर मिलेंगे

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

दर्द व ग़म के वक़्त एक दूसरे के लिये वफ़ा हो जाना
जुदाई व तन्हाई का एक-दूजे के लिये ज़फ़ा हो जाना
बेरुख़ी और तौहीन से हमारा आपस में ख़फ़ा हो जाना
रूठने व मनाने से गिले और शिक़वे का दफ़ा हो जाना

हमारा क़शिश व प्यार में बेक़रार हो जाना
बेबस और मज़बूर होकर इज़हार हो जाना
तमाम उम्र साथ निभाने का क़रार हो जाना
तन व मन का आपस में यक़सार हो जाना

जब ये सब कुछ मुमक़िन हो गया है
तो फिर क्या यह मुमक़िन होगा कि
मज़बूर दिल की पुकार से सब कुछ
आशा औ विश्वास से इतना सब कुछ
पवित्र व निर्मल अंग-अंग से सब कुछ
जोश और जुनून से इतना सब कुछ
कब, क्यों औ कैसे ख़त्म हो सकता है

हाँ यह इतना सब कुछ उस वक़्त
हमेशा के लिये ख़त्म हो जायेगा
जब दोनों हमेशा-हमेशा के लिये
चिर निद्रा में दोनों ही एक साथ
इस वफ़ा उम्मीद और ऐतबार से
बेचैन-बेबस होकर सो जायेंगे कि
हम दोनों इस जन्म में तो न सही
अगले जन्म में ज़रूर-ज़रूर मिलेंगे

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

जुदाई और तन्हाईयों का वक़्त बेहिसाब हो जाना
बेक़रारी में गीत और ग़ज़ल की किताब हो जाना
मुलाक़ात के लिये दूरियों का भी अज़ाब हो जाना
दर्द औ ग़म के वक़्त मुहब्बत का सवाब हो जाना

सिर्फ़ अपना ही बने रहने के लिये कस्में दिलाना
बेबसी, बेचैनी औ बेक़रारी के हालात को समझाना
प्यार को पाने के लिये अपने आपको भी मिटाना
बेइन्तहा चाहत व क़शिश के सुबूतों को दिखाना

जब ये सब कुछ मुमक़िन हो गया है
तो फिर क्या यह मुमक़िन होगा कि
शजर के चिन्तन से इतना सब कुछ
गीत-ग़ज़ल व शेरो-सुख़न में सब कुछ
नग्मों और तरानों से इतना सब कुछ
शक़ औ शिक़ायतों से इतना सब कुछ
कब, क्यों और कैसे ख़त्म हो सकता है

हाँ यह इतना सब कुछ उस वक़्त
हमेशा के लिये ख़त्म हो जायेगा
जब दोनों हमेशा-हमेशा के लिये
चिर निद्रा में दोनों ही एक साथ
इस वफ़ा उम्मीद और ऐतबार से
बेचैन बेबस होकर सो जायेंगे कि
हम दोनों इस जन्म में तो न सही
अगले जन्म में ज़रूर ज़रूर मिलेंगे

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

आहिस्ता-आहिस्ता रिश्तों के मायने बदल जाना
रिश्तों के अहसास से वैसे ही जज़्बात को पाना
दिलों में हर वक़्त मुहब्बत के ख़यालों का आना
तन और मन से मुहब्बत को सम्पूर्ण संसार माना

अपने हक़ के वास्ते आपस में झगड़ना
मुलाक़ात के लिये बेबस होकर तरसना
छोटी सी बातों पर बच्चों जैसे मचलना
एक-दूजे की नादाँ ग़लतियों पे बिगड़ना

जब ये सब कुछ मुमक़िन हो गया है
तो फिर क्या यह मुमक़िन होगा कि
अजर-अमर प्यार से इतना सब कुछ
ख़्वाबों व ख़यालों से इतना सब कुछ
परिवार के अहसास से इतना सब कुछ
अपने-अपने जीवन में इतना सब कुछ
कब, क्यों और कैसे ख़त्म हो सकता है

हाँ यह इतना सब कुछ उस वक़्त
हमेशा के लिये ख़त्म हो जायेगा
जब दोनों हमेशा-हमेशा के लिये
चिर निद्रा में दोनों ही एक साथ
इस वफ़ा उम्मीद और ऐतबार से
बेचैन-बेबस होकर सो जायेंगे कि
हम दोनों इस जन्म में तो न सही
अगले जन्म में ज़रूर-ज़रूर मिलेंगे

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मज़बूर हो कर नाज़ायज़ को ज़ायज़ बताना
चाहत में बेक़रार होकर हमारा अश्क़ बहाना
हर तरह की बला से अपने प्यार को बचाना
मुलाक़ात के लिये हर दिन नये बहाने बनाना

दर्द व ग़म के वक़्त एक दूसरे के लिये वफ़ा हो जाना
जुदाई व तन्हाई का एक-दूजे के लिये ज़फ़ा हो जाना
बेरुख़ी और तौहीन से हमारा आपस में ख़फ़ा हो जाना
रूठने व मनाने से गिले और शिक़वे का दफ़ा हो जाना

यह सब कुछ मुमक़िन हो गया है
तो फिर क्या ये मुमक़िन होगा कि
स्वर्ग से भी सुंदर इतना सब कुछ
दिल व दिमाग़ और तन व मन से
रोम-रोम के अहसास से सब कुछ
क्यों और कैसे ख़त्म हो सकता है

हाँ यह इतना सब कुछ उस वक़्त
हमेशा के लिये ख़त्म हो जायेगा
जब दोनों हमेशा-हमेशा के लिये
चिर निद्रा में दोनों ही एक साथ
इस वफ़ा उम्मीद और ऐतबार से
बेचैन-बेबस होकर सो जायेंगे कि
हम दोनों इस जन्म में तो न सही
अगले जन्म में ज़रूर-ज़रूर मिलेंगे

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

एक दूसरे की ज़रूरतों के लिये ईमानदार हो जाना
एक दूसरे की ख़ुशियों के लिये तीमारदार हो जाना
एक दूसरे के दर्दो ग़म के लिये ग़मगुसार हो जाना
एक दूसरे की हमदर्दी के लिये ख़ुशगवार हो जाना

चाहत औ क़शिश में हम दोनों का लाचार हो जाना
एक दूसरे के दिल और दिमाग़ पर ऐतबार हो जाना
गिले व शिक़वे दूर करके हमारा समझदार हो जाना
एक दूसरे की परेशानियों के लिये वफ़ादार हो जाना

यह सब कुछ मुमक़िन हो गया है
तो फिर क्या ये मुमक़िन होगा कि
दीन और ईमान से इतना सब कुछ
हँसी औ मज़ाक में इतना सब कुछ
सात वचनों के बन्धन से सब कुछ
हसीन अहसास से इतना सब कुछ
क्यों और कैसे ख़त्म हो सकता है

हाँ यह इतना सब कुछ उस वक़्त
हमेशा के लिये ख़त्म हो जायेगा
जब दोनों हमेशा-हमेशा के लिये
चिर निद्रा में दोनों ही एक साथ
इस वफ़ा उम्मीद और ऐतबार से
बेचैन-बेबस होकर सो जायेंगे कि
हम दोनों इस जन्म में तो न सही
अगले जन्म में ज़रूर-ज़रूर मिलेंगे।

---

1. अज़ान=प्रार्थना की पुकार **2.** ऐतबार=विश्वास **3.** आशना=परिचित **4.** बेगाना= अन्ज़ान **5.** बेख़ुदी=बेख़बर **6.** ख़ुमार=मदहोश **7.** मज़ार=समाधी स्थल **8.** रुख़सार=गाल **9.** शबाब=बदन **10.** सुख़न=कविता **11.** शजर=पेड़ **12.** नग्मों और तरानों=गीत संगीत **13.** अदावत=दुश्मनी **14.** इबादत=प्रार्थना **15.** रुसवाईयों=बदनामी **16.** इनायत=कृपा **17.** ज़ियारत=तीर्थ यात्रा **18.** अल सुबह=भोर **19.** दीदार=दर्शन **20.** आफ़ताब=सूरज **21.** माहताब=चन्द्रमा **22.** कायनात=संसार **23.** मुक़म्मिल=सर्म्पूण **24.** बेज़ार=उदास **25.** दफ़ा=दूर हो जाना **26.** ख़फा=नाराज **27.** अज़ाब=अभिशाप **28.** सवाब=पुण्य **29.** मायने=अर्थ **30.** तीमारदार=सेवा करने वाला **31.** ग़म गुसार=ग़म कम करने वाला।

मधुर मिलन का अहसास

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

दोनों के लबों पर मधुर प्यार का प्याला था
बेक़रार तन व मन रोम-रोम में मतवाला था
अंग-अंग में मदहोशी का आलम निराला था
तन और मन में रोशन प्यार का उजाला था

ऐसा था हमारे प्रथम मधुर मिलन की
यादग़ार हसीन अहसास की मुलाक़ात का प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

तन और मन में बसन्त का मधु मास था
दिल औ दिमाग़ में सावन का प्रवास था
रोम-रोम में हमारे प्यार का अहसास था
पल-पल में पवित्र मुहब्बत का आवास था

ऐसा था हमारे प्रथम मधुर मिलन की
यादग़ार हसीन अहसास की मुलाक़ात का संसार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

बेक़रार मन चैन औ सुक़ून से ख़ामोश था
रोम-रोम प्यार के अहसास में मदहोश था
तन और मन में मधुर मिलन का जोश था
सारा संसार भूलकर एक-दूजे का होश था

ऐसा था हमारे प्रथम मधुर मिलन की
यादग़ार हसीन अहसास की मुलाक़ात का ख़ुमार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

सात फेरों के बंधन का निर्मल और पवित्र अहसास था
सुहाग के सिन्दूर का तन और मन में पूर्ण विश्वास था
फूलों से महकती सेज पर सुहागरात का सहवास था
मधुर मिलन की यादों में हसीन जन्नत का आभास था

ऐसा था हमारे प्रथम मधुर मिलन की
यादग़ार हसीन अहसास की मुलाक़ात का क़रार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

सात वचनों के बन्धन का दिल में पवित्र क़रार था
वरमाला से एक-दूजे का वरण मन से स्वीकार था
एक-दूजे के दिल में ख़ुशहाल घर और परिवार था
रस्मों व रिवाज़ों के लिये करवा चौथ का त्यौहार था

ऐसा था हमारे प्रथम मधुर मिलन की
यादग़ार हसीन अहसास की मुलाक़ात का ऐतबार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

हसीन कल्पनाओं का मन में ख़ूबसूरत आकार था
सच होता हुआ सपना हकीक़त में ही साकार था
दिल में एक-दूजे के लिये ख़यालों का प्रसार था
तन व मन में एक दूजे के जज़्बातों का संचार था

ऐसा था हमारे प्रथम मधुर मिलन की
यादग़ार हसीन अहसास की मुलाक़ात का दीदार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

हसीन अहसास से अजर और अमर हमारा प्यार था
हमारा तन-मन निर्मल औ पवित्र प्यार पर सवार था
प्यार में चाहत और क़शिश का अहसास बेशुमार था
जन्म-जन्म के लिये जीवन साथी होने का क़रार था

ऐसा था हमारे प्रथम मधुर मिलन की
यादग़ार हसीन अहसास की मुलाक़ात का आधार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

हमेशा-हमेशा के लिये दिल में यादगार था
चाहत औ क़शिश में तन-मन तलबगार था
तमाम उम्र साथ में गुज़ारने का ऐतबार था
हर वक़्त आँखों के सामने विसाले यार था

ऐसा था हमारे प्रथम मधुर मिलन की
यादग़ार हसीन अहसास की मुलाक़ात का चमत्कार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मुद्दत से बेचैन औ बेक़रार हो कर गले मिलना
एक दूजे की हसीं बाँहों में हमारा समाते रहना
बेताब हो कर एक-दूजे के बदन का पिघलना
तन और मन को प्यार करने के लिए मचलना

ऐसा था हमारे प्रथम मधुर मिलन की
यादग़ार हसीन अहसास की मुलाक़ात का अधिकार

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
ऐसा था हमारे प्रथम मधुर मिलन की
यादग़ार हसीन अहसास की मुलाक़ात का मयार।

---

1. ख़ुमार=मदहोश **2.** ऐतबार=विश्वास **3.** दीदार=दर्शन **4.** तलबगार=इच्छुक **5.** विसाले यार=महबूब का मिलन **6.** मुद्दत=अन्तराल **7.** मयार=उच्च स्तर

महबूब का अहसान

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन और मन के सम्पूर्ण संसार

अहसानमंद हूँ आपके निर्मल औ पवित्र प्यार का
जो हर पल रोम-रोम में संचार होकर विद्यमान है
जो प्रतीक है राधा,मीरा और कृष्ण के रिश्तों का
जो मिसाल है हीर व रांझा के पवित्र संबन्धों का

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन और मन के सम्पूर्ण संसार

जिसमें रस्मों और रिवाज़ों के तीज और त्यौहार हैं
जिसमें करवा चौथ का व्रत व सावन के सोमवार हैं
जिसमें हर हाल में एक-दूजे पर दिल से ऐतबार है
जिसमें विचारों के इज़हार व इक़रार और क़रार है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन और मन के सम्पूर्ण संसार

जिसमें प्यार के अजर-अमर होने की मनोकामना है
जिसमें प्यार एक साधना,उपासना और आराधना है
जिसमें मुश्क़िल वक़्त के लिए दोस्ती की भावना है
जिसमें जल कर चराग़े रोशनी बनने की कामना है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन और मन के सम्पूर्ण संसार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
इसलिये मैं तमाम उम्र आपका
शुक्रगुज़ार और अहसामन्द रहूँगा

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन और मन के सम्पूर्ण संसार

अहसानमंद हूँ आपके निर्मल औ पवित्र प्यार का
जो हरपल रोम-रोम में संचार होकर विद्यमान है
जो प्रतीक है राधा, मीरा और कृष्ण के रिश्तों का
जो मिसाल है हीर व रांझा के पवित्र संबन्धों का

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन और मन के सम्पूर्ण संसार

आपकी वज़ह से मेरा जीवन ख़ुशगवार है
मेरे रोम-रोम में सदाबहार लम्हे बेशुमार है
मेरे दिल औ दिमाग़ में ख़ूबसूरत संसार है
मेरी क़िस्मत का दिन और रात विस्तार है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन और मन के सम्पूर्ण संसार

जिसमें सुहाग का सिन्दूर और सात वचनों का बन्धन है
जिसमें प्यार की ख़ुशहाली के लिए शजर का चिन्तन है
जिसमें प्यार इन्सान के लिए हवा औ पानी का मन्थन है
जिसमें मन की वीणा के मधुर गीत-संगीत का गुन्जन है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
इसलिये मैं तमाम उम्र आपका
शुक्रगुज़ार और अहसामन्द रहूँगा

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन और मन के सम्पूर्ण संसार

अहसानमंद हूँ आपके निर्मल औ पवित्र प्यार का
जो हरपल रोम-रोम में संचार होकर विद्यमान है
जो प्रतीक है राधा, मीरा और कृष्ण के रिश्तों का
जो मिसाल है हीर व रांझा के पवित्र संबन्धों का

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन और मन के सम्पूर्ण संसार

जिसमें जान को निसार करने के अरमान हैं
जिसमें दिल-दिमाग़ में मुहब्बत के निशान हैं
विरह की वेदना में बेबस दिल की अज़ान है
जिसमें एक दूसरे के बिना तन-मन बेजान है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन और मन के सम्पूर्ण संसार

आपकी वज़ह से मेरे जीवन में मधुमास है
मेरे रोम-रोम में हसीन पल का अहसास है
मेरे दिल व दिमाग़ में ऐतबार व विश्वास है
मेरी रोशन क़िस्मत का दिन-रात विकास है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
इसलिये मैं तमाम उम्र आपका
शुक्रगुज़ार और अहसामन्द रहूँगा

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन और मन के सम्पूर्ण संसार

अहसानमंद हूँ आपके निर्मल औ पवित्र प्यार का
जो हरपल रोम-रोम में संचार होकर विद्यमान है
जो प्रतीक है राधा, मीरा और कृष्ण के रिश्तों का
जो मिसाल है हीर व रांझा के पवित्र संबन्धों का

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन और मन के सम्पूर्ण संसार

जिसमें शमा और परवाने के लिए क़ुदरत का जहान है
जिसमें मिलन की आरज़ू ख़ुदा की इबादत में अज़ान है
जिसमें एक दूसरे की भावनाओं का मान और सम्मान है
जिसमें एक-दूजे की ज़रूरत के लिए जज़्बाती अरमान हैं

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन और मन के सम्पूर्ण संसार

जिसमें विरह की व्याकुल वेदना मिलन की मुरादें हैं
जिसमें तन औ मन से एकसार होने की कोशिशें हैं
जिसमें प्रेम की हिफ़ाज़त के लिए दिल की दुआयें हैं
जिसमें जन्मों-जन्मों तक साथ रहने की ख़्वाहिशें हैं

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
इसलिये मैं तमाम उम्र आपका
शुक्रगुज़ार और अहसामन्द रहूँगा

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन और मन के सम्पूर्ण संसार

अहसानमंद हूँ आपके निर्मल औ पवित्र प्यार का
जो हरपल रोम रोम में संचार होकर विद्यमान है
जो प्रतीक है राधा,मीरा और कृष्ण के रिश्तों का
जो मिसाल है हीर व रांझा के पवित्र संबन्धों का

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन और मन के सम्पूर्ण संसार

मुस्तक़बिल मेरी तमन्नाओं का आफ़ताब है
ज़माने में मेरे मान-सम्मान का माहताब है
मेरा सुनहरा भविष्य ज़माने में लाज़वाब है
कायनात में घर परिवार क़ाबिले आदाब है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन और मन के सम्पूर्ण संसार

जिसमें तन-मन का संसार होने का विश्वास है
जिसमें घर-परिवार होने का अपना अहसास है
जिसमें सतरंगी सावन औ बसन्त का मधुमास है
जिसमें भावनाओं के लिये तन-मन में उपवास है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
इसलिये मैं तमाम उम्र आपका
शुक्रगुज़ार और अहसामन्द रहूँगा

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन और मन के सम्पूर्ण संसार

अहसानमंद हूँ आपके निर्मल औ पवित्र प्यार का
जो हर पल रोम-रोम में संचार होकर विद्यमान है
जो प्रतीक है राधा,मीरा और कृष्ण के रिश्तों का
जो मिसाल है हीर व रांझा के पवित्र संबन्धों का

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन और मन के सम्पूर्ण संसार

जिसमें दिल की पुकारों से शहनाई का सगुन है
जिसमें बेशुमार मुहब्बत की चाहत का गुलशन है
जिसमें ख़यालों से बेहिसाब ख़ुशियों का दामन है
जिसमें रूह का ईश्वर से निर्मल-पवित्र मिलन है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन और मन के सम्पूर्ण संसार

निर्मल और पवित्र प्यार से जीवन में सवाब है
अजर और अमर आपकी मुहब्बत का ज़वाब है
शान औ शौक़त से ज़िंदगी मुक़म्मिल नवाब है
इज़्जत व आबरू से घर-परिवार का हिज़ाब है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
इसलिये मैं तमाम उम्र आपका
शुक्रगुज़ार और अहसामन्द रहूँगा।

---

1. इबादत=प्रार्थना **2.** अजान=प्रार्थना की पुकार **3.** मुक़म्मिल=सम्पूर्ण **4.** हिज़ाब=पर्दा
5. मुस्तक़बिल=मान-सम्मान **6.** आफ़ताब=सूरज **7.** माहताब=चन्द्रमा

मुहब्बत के सुबूत

हे! परम पिता परमेश्वर
आपका मुझ पर बहुत अहसान है
जो आपने मुझे ऐसे ज़हीन महबूब का
इस तरह निर्मल और पवित्र प्यार दिया है

मेरे नाम का ही उसकी माँग में सिन्दूर है
मेरे नाम का मंगलसूत्र पहनकर मगरूर है
मेरे नाम का ही करवा चौथ का दस्तूर है
वह सुहाग के रस्मो-रिवाज़ों से मज़बूर है

यक़ीनन वह तन और मन से
तमाम उम्र के लिये शरीके-हयात है

हे! परम पिता परमेश्वर
आपका मुझ पर बहुत अहसान है
जो आपने मुझे ऐसे ज़हीन महबूब का
इस तरह निर्मल और पवित्र प्यार दिया है

उसके तसव्वुर में लिखे हुये मेरे अशआर हैं
जो उसकी ही दिली गुफ़्तगू से गुलज़ार हैं
मेरे सुख़नवर की रूह का वही तीमारदार है
मेरी नज़्मों के फलसफ़े का वही चारागार है

यक़ीनन मेरी शायरी के नग्में व तराने
उसके पवित्र प्यार की ही कलम दवात है

हे! परम पिता परमेश्वर
आपका मुझ पर बहुत अहसान है
जो आपने मुझे ऐसे ज़हीन महबूब का
इस तरह निर्मल और पवित्र प्यार दिया है

इस तरह ज़लील हो जाने के बाद भी
रो-रो कर बेहाल हो जाने के बाद भी
तन-मन से बेचैन हो जाने के बाद भी
हालात से मज़बूर हो जाने के बाद भी

यक़ीनन उसके बेबस व बेचैन दिल में
मेरा प्यार ही उस की मुक़म्मिल हयात है

हे! परम पिता परमेश्वर
आपका मुझ पर बहुत अहसान है
जो आपने मुझे ऐसे ज़हीन महबूब का
इस तरह निर्मल और पवित्र प्यार दिया है

अपनों से भी बेवफ़ाई को लाचार है
ज़माने भर में रुसवाई को तैयार है
गर्दिशों में हर तरह से मददगार है
ज़रूरत के वक़्त में वो जाँनिसार है

यक़ीनन उसके बेक़रार-बेताब दिल में
ताउम्र के लिये शरीके-हयात के जज़्बात है।

मन की मुरादें

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

पवित्र प्रेम की देवी बनकर
मेरी आराधना हो जाओ कि
मेरे नास्तिक तन व मन को
ईश्वर का विश्वास हो जाये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

दिल की निर्मल पुकार बन कर
दुआओं का असर हो जाओ कि
मेरे बेताब दिल और दिमाग़ को
मधुर मिलन के आभास हो जाये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

रस्मों व रिवाज़ों का बंधन बनकर
परिवार की ज़रूरत हो जाओ कि
अंग-अंग व रोम-रोम को प्यार में
जीवन-साथी का अहसास हो जाये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

निर्मल व पवित्र मुहब्बत के रंग में रंगकर
सतरंगी इन्द्रधनुष का बसंत हो जाओ कि
हरियाले सावन के सुहावने हसीं मौसम में
प्यार का महकते चमन में निवास हो जाये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

करवा चौथ का त्यौहार बनकर
उपासना व साधना हो जाओ कि
ऐतबार से रिश्तों के अहसास का
मन के मन्दिर में आवास हो जाये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

प्यार के कच्चे धागे के बन्धन में बन्ध कर
अहसास व विश्वास के वस्त्र हो जाओ कि
एक दूसरे के दिल और दिमाग़ के जज़्बात
निर्मल और पवित्र प्यार में कपास हो जाये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

दिलो-दिमाग़ में प्राणों का संचार बनकर
प्यार के दरिया की रवानी हो जाओ कि
अहसास के विशाल और गहरे समंदर में
प्रेम का मन की क़श्ती में प्रवास हो जाये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मुलाक़ात के वक़्त दो बदन एक जाँ बनकर
दो रूहों का ऐसा मधुर मिलन हो जाओ कि
हमारे निर्मल और पवित्र प्यार में तन व मन
दरवेश की साधना होने का प्रयास हो जाये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मुहब्बत में दीया और बाती बन कर
जीवन में ऐसा प्रकाश हो जाओ कि
गर्दिश और बदहाली की ज़िन्दगी में
प्यार की रोशनी से उजास हो जाये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

जज़्बात से माँग में सुहाग का सिंदूर बनकर
दिल में विश्वास की वर माला हो जाओ कि
सात वचनों के निर्मल और पवित्र बन्धनों से
सुहाग की सेज पे मधुरतम् सहवास हो जाये

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
प्यार से हमारा घर और परिवार
ख़ूबसूरत, हसीन और ख़ुशगवार हो जाये।

मुहब्बत की दास्तान

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

प्यार बदहाली व रुसवाइयों की ख़िज़ा है
तपते सहरा में बिना पानी प्यार पलता है
मुहब्बत उस महकते गुलशन की ख़ुश्बू है
जो ज़माने के आशियानों में नहीं महकती

न तो कोई मंज़िले मक़सूद है
नहीं कोई मुहब्बत का रहबर है
प्यार मुग़ालते का ऐसा सफ़र है
जिसका कोई मक़ाम नहीं होता

आहों में आबाद है दर्द और ग़म
विरह में मचलता है नादान दिल
यादों से होती है तन्हाईयाँ रोशन
जो जुदाईयों में बेचैन करवटों से
अन्धेरी रातों में तारे गिनवाती है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
ऐसी होती है मुहब्बत की दास्तान

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

ज़माना ज़ालिम सितमग़र है
दीवाने बेबस और लाचार हैं
फिर भी मुहब्बत वह फ़र्ज़ है
जिसके अहसास औ जज़्बात
यादों से जुदा नहीं हो पाते है

पुरवाई हवायें चल रही हैं
चमन में गुल खिल रहे हैं
हसीन फ़िज़ा महक रही है
मुहब्बत मिलन को बेताब है
मगर सितमगर रिवायतों से
बेताब और मज़बूर रहती है

अफ़वाहों की आँधियाँ हैं
रुसवाइयों का समन्दर है
उफनते तूफ़ाँ में क़श्ती है
और मुहब्बत बिना पतवार
जिसे साहिल नहीं मिलता

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
ऐसी होती है मुहब्बत की दास्तान

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

मुहब्बत एक आबाद गुलशन है
जिसमें चैनो-सुक़ून महकता है
जिसमें वफ़ा के गुल खिलते हैं
जिसमें ख़ुशहाली के उपवन है
फिर भी ज़माना नहीं समझता

मज़बूर ज़िंदगी ख़त्म हो जाती है
दिल से यादें फिर भी नहीं जाती
मुहब्बत दीवानगी का वह सफ़र है
जिसका सफ़र ताबूत हो जाता है
मगर पिया की याद नहीं जाती है

बेबस ग़मगीन आँखें चश्मतर है
आशियाना अश्क़ों से समन्दर है
मुहब्बत वो दरिया-ए-विसाल है
जो साहिल पे प्यासी तड़पती है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
ऐसी होती है मुहब्बत की दास्तान

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार

सावन भादों जैसे मौसम है
गगन घटाओं से आबाद है
कोयल जैसी सुरीली धुन है
मुहब्बत वह पुरवाई घटा है
जिसमें मौसम हसीं रहता है

महल में चराग़ रोशन होते हैं
तहख़ानों में मशालें जलती हैं
जंगलों में जुगनू जगमगाते हैं
मगर प्यार वो जलती शमा है
जो तूफ़ाँ में भी नहीं बुझती है

ओह! मेरे मधुर प्यार
मेरे तन-मन के सम्पूर्ण संसार
ऐसी होती है मुहब्बत की दास्तान।

---

1. रुसवाई=बदनामी **2.** मन्ज़िले मक़सूद= आख़िर पड़ाव **3.** रहबर=मार्गदर्शक **4.** मुग़ालते= असमंजस **5.** फ़िज़ा=वातावरण **6.** रिवायत=परम्परा **7.** रुसवाई=बदनामी **8.** साहिल= किनारा **9.** चश्मतर=झरने जैसी **10.** विसाल=मिलन **11.** साहिल=किनारा

मुहब्बत का ऐतबार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
बेताब मुहब्बत का करो ऐतबार

मेरे लिये ख़ुद अपने आपसे भी बेग़ाना हो
मेरे ख़यालों में हर वक़्त रहते दीवाना हो
मेरे हसीन ख़्वाबों की मस्ती में मस्ताना हो
बेख़ुदी के आलम में महकते आशियाना हो

यक़ीनन आपके रग-रग और अंग-अंग में
मेरी निर्मल व पवित्र मुहब्बत के ख़यालात है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
पवित्र मुहब्बत का करो इक़रार

दरवेश जैसी आपकी मुहब्बत में इबादत है
मेरी यादों के सहारे जीना ही ज़ियारत है
मेरे लिये तो ज़माने से आपकी अदावत है
बहुत कुछ खो कर मुहब्बत ही तिजारत है

यक़ीनन आपके ख़्वाबों और ख़यालों में
मेरी चाहत व क़शिश के ख़ूबसूरत सवालात है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
बेक़रार मुहब्बत का करो दीदार

करवटें बदल-बदल कर रतजगी रातें हैं
दिल औ दिमाग़ में सिर्फ़ मेरी ही बातें हैं
विरह की वेदना में मेरे गीत गुनगुनाते हैं
अपने बेबस व बेचैन दिल को समझाते हैं

यक़ीनन आपके तन व मन में
मेरी मधुर यादों की ही बारात है

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
बेशुमार मुहब्बत को करो विसालेयार

आपके तन औ मन में मेरे प्यार का ही ख़ुमार है
आपकी नज़र में मेरी शख़्सियत का ही दीदार है
आपके ख़यालातों में मेरे तसव्वुर का ही शुमार है
आपके ख़्वाबों में मेरी मुहब्बत ही परवर दीगार है

यक़ीनन आपका दिल और दिमाग़
मेरी ख़ुशगवार मुलाक़ातों की ख़यात है।

---

1. बेग़ाना=पराया **2.** बेख़ुदी=अपने आपसे बेख़बर **3.** दरवेश=सन्त **4.** इबादत=पूजा **5.** ज़ियारत=धार्मिक यात्रा **6.** अदावत=दुश्मनी **7.** तिज़ारत=व्यापार **8.** तसव्वुर=ख़याल **9.** शुमार=शामिल **10.** परवर दीगार=परमात्मा **11.** ख़यात=महफ़िल।

मुहब्बत के इत्मीनान

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
अपने बेचैन दिल दिमाग़ पर
निर्मल व पवित्र तन-मन से करो
अजर और अमर प्यार का ऐतबार

दिलो-दिमाग़ से मेरे महबूब मुझपे करो ऐतबार
मैंने कभी भी नहीं किया अपने वादे से इंकार
मुझे हमेशा याद रहेगा जो किया है मैंने क़रार
उम्रभर साथ रहेगा आपका प्यार भरा इज़हार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
अपने बेचैन दिल-दिमाग़ पर
निर्मल व पवित्र तन-मन से करो
अजर और अमर प्यार का ऐतबार

मैं भी हमेशा रहता हूँ बेहद बेचैन और बेक़रार
मैं हमेशा रहूँगा आपके लिये हर वक़्त वफ़ादार
मेरे दर्द और ग़मों के आप ही तो हैं तीमारदार
मगर रस्मो-रिवाज़ से मैं इतना बेबस व लाचार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

अपने बेचैन दिल-दिमाग़ पर
निर्मल व पवित्र तन-मन से करो
अजर और अमर प्यार का ऐतबार

मिलन की चाहत में आप ही हैं मेरे विसाले यार
आँखों में हर वक़्त आपका चेहरा ही दीदारे यार
मेरे दिल व दिमाग़ में आपकी चाहत है बरक़रार
मेरे ख़्वाबों व ख़यालों में सिर्फ़ आपका ही विचार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
अपने बेचैन दिल-दिमाग़ पर
निर्मल व पवित्र तन-मन से करो
अजर और अमर प्यार का ऐतबार

मुझ पर नहीं तो रहम दिल ख़ुदा पे तो करो ऐतबार
ख़ुदा की ख़्वाहिशों व तमन्नाओं से मत करो इंकार
ख़ुदा की रज़ा मन्दी से सारे के सारे पूरे होंगे क़रार
मेरे महबूब मुझको मत करो इतना मज़बूर औ लाचार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
अपने बेचैन दिल-दिमाग़ पर
निर्मल व पवित्र तन-मन से करो
अजर और अमर प्यार का ऐतबार

मैं बेवफ़ा नहीं हालात से हूँ बहुत बेबस व मज़बूर
आपकी मुहब्बत में हर वक़्त रहता हूँ बेहद मगरूर
दिल-दिमाग़ में रहता है हसीन गुफ़्तगू का सुरूर
ख़्वाब और ख़याल एक दिन हकीक़त होंगे ज़रूर

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
अपने बेचैन दिल-दिमाग़ पर
निर्मल व पवित्र तन-मन से करो
अजर और अमर प्यार का ऐतबार

एक दूसरे के हालात को समझें और बनें समझदार
एक-दूजे के दर्दों-ग़म को कम करते रहेंगे लगातार
हर हालात में हम हमेशा रहें वफ़ादार औ ईमानदार
ज़िंदगी का सफ़र हमेशा रहे मज़ेदार औ ख़ुशगवार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
अपने बेचैन दिल-दिमाग़ पर
निर्मल व पवित्र तन-मन से करो
अजर और अमर प्यार का ऐतबार

क़ोशिशें क़ामयाब होगी, वादे ज़रूर पूरे होगें मेरे प्यार
अपने तन व मन को मत करो ऐसा बेचैन औ बेक़रार
दिल औ दिमाग़ में प्यार की मधुर यादें रहेंगी बेशुमार
ख़्वाबों व ख़यालों में एक-दूजे का तसव्वुर रहेगा शुमार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार

अपने बेचैन दिल-दिमाग़ पर
निर्मल व पवित्र तन-मन से करो
अजर और अमर प्यार का ऐतबार

हमारी ख़ुबसूरत कल्पनायें बहुत शीघ्र होगी साकार
हमारी मुहब्बत बहुत जल्दी ही लेगी सम्पूर्ण आकार
हमारे प्यार का ग़ुलशन हमेशा महकेगा सदा बहार
तब तक मेरे मधुर प्यार इत्मीनान से करो इन्तज़ार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
अपने बेचैन दिल दिमाग़ पर
निर्मल व पवित्र तन-मन से करो
अजर और अमर प्यार का ऐतबार

प्यासे को दो बून्द जैसा अमृत रहेगा हमारा प्यार
मधुर मुलाक़ातें रहेगी सावन और बसन्त की बहार
इज्ज़त-आबरू का सरमाया कभी मत करो बेकार
विरह वेदना में दिल को मत करो बेबस औ बेज़ार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
अपने बेचैन दिल दिमाग़ पर
निर्मल व पवित्र तन-मन से करो
अजर और अमर प्यार का ऐतबार

हमारे हसीन सपने बहुत जल्दी ही होगें साकार
हमारी मधुर मुहब्बत शीघ्र लेगी ख़ूबसूरत आकार
हमारी मुहब्बत का सफ़र ताउम्र रहेगा ख़ुशगवार
हम दोनों एक-दूजे के लिये हमेशा रहेंगे वफ़ादार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
अपने बेचैन दिल-दिमाग़ पर
निर्मल व पवित्र तन-मन से करो
अजर और अमर प्यार का ऐतबार

हमें समझने होंगे एक दूसरे के अहसास और जज़्बात
मिलन की चाहत में रहेगी एक दूजे से मधुर मुलाक़ात
हमारे दिल व दिमाग़ में हमेशा रहेंगे हसीन ख़यालात
फलसफ़ा यह हो कि एक दिन होगें हम शरीक़े-हयात

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
अपने बेचैन दिल दिमाग़ पर
निर्मल व पवित्र तन-मन से करो
अजर और अमर प्यार का ऐतबार

तमन्नाओं और ख़्वाहिशों को देते रहेंगे मनमाफ़िक आकार
दिलो-दिमाग़ में ख़्वाबों को करते रहेंगे मनमर्जी से साकार
ख़्वाबों ख़यालों में तसव्वुर करते रहेंगे ख़ूबसूरत व मज़ेदार
हकीक़त से ज़्यादा कल्पनायें होती हैं हसीन औ ख़ुशगवार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार
अपने बेचैन दिल दिमाग़ पर
निर्मल व पवित्र तन-मन से करो
अजर और अमर प्यार का ऐतबार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार।

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन-मन के सम्पूर्ण संसार।

---

1. तीमारदार=देखभाल करने वाला **2.** विसाले यार=मिलने वाला महबूब **3.** दीदारे यार=महबूब का दर्शन **4.** मग़रूर=गर्वित **5.** गुफ़्तगू=बातचीत **6.** सुरूर=मदहोश **7.** तसव्वुर=विचार **8.** शुमार=शामिल **9.** सरमाया=जमा पूँजी **10.** बेज़ार=उदास **11.** फलसफ़ा=चिन्तन **12.** शरीक़े-हयात=जीवन साथी।